



# तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

६६

निःशल्य

सल काढ़े सुध हुआं तिण सूं  
सीझें आतम कांमो।

शल्य निकालकर जो स्वस्थ  
हो जाता है। उसकी आत्मा का  
कार्य सिद्ध हो जाता है।

—आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

● वर्ष 27 ● अंक 09 ● 01 दिसंबर - 07 दिसंबर, 2025



प्रत्येक सोमवार

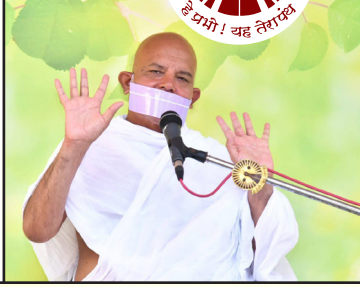
● प्रकाशन तिथि : 29-11-2025 ● पेज 16

₹ 10 रुपये



पुनर्जन्म की धारणा को  
स्वीकार करते हुए श्रेष्ठ  
जीवन जीने का हो प्रयास :  
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02



बहुश्रुत की पर्युपासना  
से संभव है आत्म  
कल्याण : आचार्यश्री  
महाश्रमण

पेज 14

Address  
Here

## पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सम्यक् और यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

उदयपुर में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के पदार्पण के साथ हुआ अध्यात्म का सूर्योदय

बलीचा, उदयपुर।

24 नवम्बर, 2025

वर्ष 2025 के अहमदाबाद चातुर्मास को संपन्न कर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, शांति-दूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र के उदयपुर की नगर सीमा में मंगल प्रवेश किया। स्वागत जुलूस के साथ महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी उदयपुर के उपनगर बलीचा के प्रगति आश्रम में पधारे। आगम-आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि मोक्षमार्ग चतुरंगी बताया गया है—ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप। चरित्र के पहले या चरित्र के साथ सम्यक्त्व की आवश्यकता होती है। यदि व्यक्ति को सम्यक् ज्ञान उपलब्ध हो जाए तो चरित्र का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है।

कोई भी कार्य हम करें, उस कार्य के विषय में



यदि सम्यक् ज्ञान हो, तो वह कार्य सम्यक् रूप से संपन्न हो सकता है। अध्यात्म के क्षेत्र में भी पहले ज्ञान आवश्यक है, फिर आचरण। यदि हमने मोक्ष

को अपनी मंजिल चुना है, तो पहले हिंसा-अहिंसा, जीव-अजीव आदि तत्त्वों को समझना होगा, तभी संयम की साधना संभव है। अतः हमें सम्यक् ज्ञान

और यथार्थ बोध प्राप्त हो जाए—क्योंकि अज्ञान एक प्रकार का कष्ट है, अभिशाप है, अंधकार है। अज्ञान सभी पापों से भी अधिक अशुभ है। अज्ञान का आवरण होने पर मनुष्य करणीय-अकरणीय का विवेक ही नहीं कर पाता। इसलिए आग्रह और पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सम्यक् और यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। यह भावना रहे कि सही दृष्टि और सही ज्ञान उपलब्ध हो। जब ज्ञान के साथ आचार का समन्वय हो जाए, तब कार्य की पूर्णता संभव होती है। सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र—दोनों हों, तो मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। ज्ञान और आचार ही मोक्ष का मार्ग हैं।

जैन धर्म में अनेक ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों के स्वाध्याय से पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक, मोक्ष, परमाणु-पुद्गल, छह द्रव्यों आदि की जानकारी प्राप्त होती है। आगमों के अध्ययन से अनेक कथाएँ, प्रसंग और उदाहरण मिलते हैं, जो प्रेरणादायी भी होते हैं और मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं।

(शेष पेज 13 पर)

## एक छोटी-सी सलाह व्यक्ति को ला सकती है सही मार्ग पर : आचार्यश्री महाश्रमण

काया।

23 नवम्बर, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत वांगमय के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए कहा कि हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण सद्गुण हो सकता है—दया की भावना रखना, अनुकंपा रखना। जिस व्यक्ति में निर्मल दया की भावना होती है, वह अनेक पापों से बच सकता है। दूसरों को कष्ट देना पाप का कारण बन जाता है, और दूसरों के आध्यात्मिक कल्याण का प्रयास करना उत्तम धर्म है। जिनके हृदय

में दया बसती है, वे दूसरों को कष्ट देने में संकोच करते हैं। अनावश्यक रूप से किसी को तकलीफ नहीं पहुंचनी चाहिए।

तेरापंथ साहित्य में 'अनुकंपा' शब्द विशेष रूप से प्रतिष्ठित है। भीतर यह कंपन जागृत हो कि जो लोग अधर्म में जीवन बिता रहे हैं, उनका कल्याण कैसे हो? पाप के आचरण से आत्मा को बचाना—यही आध्यात्मिक दया है, यही अनुकंपा है। स्वयं को भी पाप से बचाना और दूसरों को समझाकर पाप-मुक्त करना भी दया का ही स्वरूप है। साधु का यह प्रयास होना चाहिए कि जो लोग पापपूर्ण जीवन जी रहे हैं, उन्हें किस प्रकार



उपदेश, मार्गदर्शन और सद्बचन द्वारा धर्म की ओर मोड़ा जाए।

उपदेश और प्रवचन के माध्यम से

अनेक व्यक्तियों का जीवन धर्म की ओर उन्मुख किया जा सकता है। कई बार एक छोटी-सी सलाह या उपदेश व्यक्ति को

गलत दिशा से हटाकर सही मार्ग पर ले आने में समर्थ होता है और उसकी दृष्टि को सम्यक् बना सकता है।

अतः हमारे जीवन में धार्मिकता अवश्य होनी चाहिए। विद्यार्थियों में नैतिकता, सद्भावना, अहिंसा और ईमानदारी जैसे संस्कार स्थापित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। ज्ञान और अच्छे संस्कार मिल जाएँ, तो मनुष्य का जीवन उत्कृष्ट बन सकता है। सभी के जीवन में शांति और समाधि बनी रहे और जीवन में जितना धर्म का पुरुषार्थ कर सकें, उतना करने का प्रयास करना चाहिए।

(शेष पेज 13 पर)



# पुनर्जन्म की धारणा को स्वीकार करते हुए श्रेष्ठ जीवन जीने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

टीडी।

22 नवम्बर, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत वांगमय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि 'स्वयं सत्य का अन्वेषण करें और सब प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रखें।' सत्य की खोज करने वाले लोग सत्य की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

वैज्ञानिक युग में अनुसंधान के आधार पर नई-नई उपलब्धियाँ और नया-नया ज्ञान प्राप्त हो सकता है। जहाँ शोध की दृष्टि होती है, वहाँ पूर्वाग्रह और दुराग्रह नहीं होना चाहिए। हर किसी की कही बात को बिना गहराई से परखे यदि व्यक्ति मान ले, तो वह सच्चाई से दूर हो सकता है। शोध का लक्ष्य हो और विधि-पूर्वक खोज की जाए तो अवश्य कुछ प्राप्त होता है।

अध्यात्म के क्षेत्र में साधना के



माध्यम से सच्चाई की प्राप्ति संभव है। एक खोज इन्द्रियों के आधार पर होती है और कुछ ज्ञान भीतर से उत्पन्न होता है। वैज्ञानिक यंत्रों की सहायता से प्रयोग कर इन्द्रिय-आधारित खोज

करता है, यह इन्द्रिय-जगत का तरीका है; परंतु कई बार इन्द्रियों की सहायता के बिना भी भीतर से ज्ञान प्रकट होता है। अध्यात्म के महर्षियों ने अतीन्द्रिय ज्ञान को प्राप्त किया है। जैन तत्त्वविद्या

में इस अतीन्द्रिय ज्ञान को अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान और केवलज्ञान कहा गया है। यदि सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाए, तो वह केवलज्ञान कहलाता है। यह अतीन्द्रिय ज्ञान इन्द्रियों की सहायता के बिना भीतर ही भीतर प्रकट होता है।

कभी-कभी व्यक्ति जाति-स्मृति ज्ञान के द्वारा अपने पूर्व भवों को जान लेता है। इसे पूर्णतः अतीन्द्रिय ज्ञान तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी यह ज्ञान भी भीतर से ही प्रकट होता है।

मनुष्य को अपने जीवन में पूर्व जन्म और पुनर्जन्म की धारणा को स्वीकार करते हुए श्रेष्ठ जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए और पापात्मक आचरण से बचना चाहिए।

यदि पुनर्जन्म है, तो उत्तम गति प्राप्त होगी, और यदि पुनर्जन्म न भी हो तो भी हमारा वर्तमान जीवन श्रेष्ठ और शांतिपूर्ण बन सकता है। धर्म के मार्ग पर चलने से आत्मा का कल्याण होता

है और जीवन शांति से व्यतीत होता है। अतः मनुष्य को सभी के प्रति मैत्री भाव रखना चाहिए और स्वयं सत्य का अन्वेषण करना चाहिए।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में दिवंगत साध्वी श्री विनयश्रीजी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। आचार्य प्रवर ने उनका संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की मंगल-कामना की।

आचार्य प्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने चार लोगसस का ध्यान किया। इसके पश्चात मुख्यमुनिश्री एवं साध्वीप्रमुखाश्री ने उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगल-कामना व्यक्त की। विद्यालय परिवार की ओर से सुनील सिंघवी ने श्रद्धाभिव्यक्ति दी, और पूज्य प्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

## अहिंसा, संयम और तप ही है धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

वागदरी।

19 नवम्बर, 2025

धर्म गंगा प्रवाहित करने हुए महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी 'जागरण जनसेवा मण्डल' द्वारा संचालित 'आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय' तथा 'गोविंद गुरु विद्या निकेतन' परिसर में पधारे। आर्हत वांगमय के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए पूज्यश्री ने फरमाया कि धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताया गया है। धर्म क्या है? अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है और तप धर्म है। जिस व्यक्ति के जीवन में अहिंसा है, संयम समाहित है और तप से जीवन तपा हुआ है, तो समझना चाहिए कि उसके जीवन में धर्म है, मंगल उसके पास है।

एक पदार्थ का जगत है और दूसरा आत्मा का जगत है। व्यक्ति की दृष्टि अध्यात्म के प्रति सजग हो जाए, स्पष्ट हो जाए कि आत्मा का कल्याण करने का मार्ग अहिंसा, संयम, तप, ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य है। दृष्टि सम्यक् हो जाए — यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। व्यक्ति कितना आचरण कर सके, यह बाद की बात है; पहले सही को सही मान लेना,



सही मार्ग को पहचान लेना आवश्यक है। मार्ग दिख जाए या मार्गदर्शक मिल जाए, तो आगे चलना व्यक्ति का अपना पुरुषार्थ है। यदि देखने की दृष्टि है, तो व्यक्ति मार्ग को देख सकेगा। धर्म के संदर्भ में सम्यक् दृष्टि मिल जाना सबसे महत्वपूर्ण है। जैन वाङ्मय में सम्यक्त्व को बहुत महत्व दिया गया है। व्यक्ति का सम्यक्त्व दृढ़ रहे, निर्मल रहे, धर्म के प्रति गहरी आस्था रहे, कठिनाई आने पर भी वह धर्म को न छोड़े। देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था हो जाए, नव तत्त्वों का बोध हो जाए और भीतर के कषाय

पतले पड़ जाएँ, अनन्तानुबंधी कषाय न रहें, दर्शन-मोहनीय का उदय न रहे—तो समझना चाहिए कि दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट हो गई है।

तीर्थंकरों को 'चक्रवृद्धाण' कहा गया है, अर्थात् वे अध्यात्म का नेत्र प्रदान करने वाले होते हैं। वह व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसका विवेक-चक्षु जागृत हो जाए या भीतर की प्रज्ञा उदित हो जाए। यदि स्वयं में विवेक नहीं है, तो ज्ञानी पुरुषों द्वारा बताए मार्ग पर चलना भी उतना ही अच्छा और फलदायी है।

आचार्यश्री ने कहा कि आज वागदरी

स्थित आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय में आने का अवसर हुआ है। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी भी कभी इस क्षेत्र में पधारे थे और आज हमारा भी यहां आना हो गया है। यह चिकित्सालय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के नाम से स्थापित है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जीवन के ग्यारहवें वर्ष में संत बन गए थे। उनका व्यक्तित्व अत्यंत विराट था। आगम-संपादन के कार्य को आगे बढ़ाने में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। प्रेक्षाध्यान पद्धति का विकास, जीवन-विज्ञान का विकास उनके द्वारा संपन्न हुआ। उनका साहित्य

अत्यंत व्यापक है, जो केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी पढ़ा जा रहा है। यहां धार्मिक-आध्यात्मिक वातावरण बना रहे। यहां आने वाले मरीजों के बाहरी नेत्र तो सुधरें ही, साथ ही भीतर की धर्म-दृष्टि भी उद्घाटित हो जाए तो जीवन का कल्याण संभव है।

आज चतुर्दशी के संदर्भ में आचार्यश्री ने हाजरी के क्रम को संपादित किया। चारित्र्यात्माओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यश्री ने बच्चों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि ज्ञान के साथ सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की भावना का भी विकास होना चाहिए। आचार्यश्री की प्रेरणा से बच्चों ने विभिन्न संकल्प स्वीकार किए। संस्थान के अध्यक्ष डॉ. दलजीत यादव ने नव-निर्मित छात्रावास का नाम 'महाश्रमण निलय' रखने की घोषणा की।

आचार्यश्री के स्वागत में जागरण जन सेवा मंडल के अध्यक्ष डॉ. दलजीत यादव, संस्थापक मूलचंद लोढ़ा, विमल चौरडिया और भीखमचंद नखत ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

# वृहद श्रावक सम्मेलन का आयोजन

चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा चेन्नई के तत्वावधान में परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वीश्री उदितयशा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में वृहद श्रावक सम्मेलन का आयोजन हुआ।

साध्वी उदितयशा जी ने अपने विलक्षण व ओजस्वी प्रवचन में कार्यशाला की मूल भावना 'पाएं संबोध-समझें दायित्व' विषय पर उद्बोधित करते हुए श्रावकों के विविध प्रकार और सम्यक्त्व श्रावक के लक्षणों का सरस विवेचन किया। अच्छा व सच्चा श्रावक कैसे बने और संघ के प्रति दायित्वबोध पर सघन प्रशिक्षण के साथ अवसरोचित रूप से ज्ञानशाला उपक्रम का उल्लेख करते हुए श्रावकों को इस उपक्रम पर विशेष ध्यान देने की प्रेरणा दी क्योंकि आज की संस्कारवान पीढ़ी ही कल के उत्कृष्ट श्रावक समाज की आधारशिला है। साध्वीश्री जी ने उन्नत

समाज के निर्माण में सभी संस्थाओं में सामंजस्यता की महत्ता भी समझाई। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रथम चरण में महिला मंडल ने सुमधुर भक्ति गीत से मंगलाचरण किया।

सभाध्यक्ष अशोक खतंग ने कार्यक्रम में चेन्नई एवं निकटवर्ती क्षेत्रों से समागत श्रावक- श्राविकाओं की कर्मठता और अनुकरणीय सेवाओं के प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हुए सबका हार्दिक स्वागत किया। तत्पश्चात कार्यक्रम संयोजक श्री विमल चिप्पड़ ने श्रावकों से तेरापंथ के विधान और गुरु इंगितानुसार मर्यादोचित आचरण करने का आह्वान किया तथा उपस्थिति के लिए श्रावक समाज के प्रति आभार व्यक्त किया। द्वितीय चरण का कलात्मक संयोजन करते हुए साध्वी संगीतप्रभा जी ने मध्यवर्ती समयांतर में श्रावकत्व को पुष्ट करने व संघ के प्रति दायित्वबोध के प्रेरक उद्बोधन व प्रसंगों के माध्यम से

उपस्थित श्रावक- श्राविकाओं के मानस को झकझोरा। साध्वी भव्ययशा जी ने क्रांतिकारी विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए श्रावकों को तेरापंथ के संस्कारों को जीवन में आत्मसात करने और देव-गुरु-धर्म पर अपनी श्रद्धा को और अधिक दृढ़ बनाने का प्रेरक प्रतिबोध दिया। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने ध्यान का संक्षिप्त लेकिन विशेष प्रयोग करवाया। साध्वीवृन्द द्वारा प्रस्तुत सुमधुर संदेशपरक व शिक्षाप्रद गीतिका की मधुर स्वर लहरियाँ देर तक सभागार में अनुगुंजित होती रहीं। इस अवसर पर वर्ष 2025 के लिए चंदादेवी डागा प्रेक्षा सेवा संस्कार पुरस्कार चयन समिति संयोजक उगमराज सांड ने श्री विमल चिप्पड़ के नाम की घोषणा की। सभाध्यक्ष अशोक खतंग ने शुभ कामना स्वर पेश किया। चिप्पड़ परिवार ने साध्वी उदितयशा जी से कृतज्ञ भाव से आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम के प्रथम चरण का संचालन सहमंत्री मनोज डूंगरवाल ने तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री गजेंद्र खाँटेड ने किया।

## आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष : 'गुरु को कैसे देखें' विषय पर विशिष्ट समायोजन

किलपाँक, चेन्नई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, किलपाँक के तत्वावधान में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, भिक्षु चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'How to see a 'GURU' (गुरु को कैसे देखें) विषय पर यह विशिष्ट समायोजन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। मुख्यवक्ता गुरु महात्रिया ने अपने संबोधन में गुरु के वास्तविक स्वरूप और जीवन में उनकी महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने श्रोताओं को समझाया कि गुरु को केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि उनके ज्ञान और चेतना के स्तर से देखना चाहिए। इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए गुरु-

शिष्य संबंध पर गहराई से प्रकाश डाला। उन्होंने एक महत्वपूर्ण सूत्र देते हुए कहा, 'गुरु भगवान नहीं हैं, लेकिन वे भगवान तक पहुँचने का मार्ग हैं। तो फिर भगवान कौन हैं?

भगवान आप स्वयं हैं।' मुनिश्री ने इस बात को समझाते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर भगवत्ता है, और गुरु वही हैं जो हमें अपनी उस आंतरिक परमात्मा तत्त्व को पहचानने और उसे प्रकट करने का मार्ग दिखाते हैं। उनके इस उद्बोधन ने आचार्य भिक्षु के जीवन और उनके अवदानों को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया। इस आध्यात्मिक समायोजन में 1200 से अधिक जैन एवं अजैन श्रोताओं इस ज्ञानवर्धक सत्र का लाभ उठाया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में तेरापंथ युवक परिषद और तेरापंथ महिला मंडल, किलपाँक की सक्रिय भूमिका रही।

## सतर्कता जागरूकता सप्ताह- 2025 का हुआ प्रारम्भ

लाडनूँ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार जैन विश्वभारती संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन व निर्देशन में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का शुभारम्भ सत्यनिष्ठ प्रतिज्ञा के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. मनीष भटनागर ने संस्थान के सभी अकादमिक, अनाकदमिक सदस्यों एवं समस्त विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार मुक्त भारत हेतु किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार में लिप्त ना होने तथा भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों से आमजन को जागरूक करने सम्बन्धी सत्यनिष्ठ प्रतिज्ञा, शपथ ग्रहण के रूप में करवाई तथा कहा कि किसी भी राष्ट्र के विकास में सबसे बड़ी बाधा विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से फैल रहा भ्रष्टाचार है। हमारा भारत विकसित देश तभी बन पाएगा, जब देश का प्रत्येक नागरिक भ्रष्टाचार उन्मूलन में पूर्ण इमानदारी से सहयोग करेगा। कार्यक्रम के संयोजक

डॉ. गिरधारी शर्मा ने बताया कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में केंद्रीय सतर्कता आयोग की सहभागी सतर्कता पहलों में से एक है। प्रत्येक वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह उस सप्ताह मनाया जाता है, जिस सप्ताह भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्मदिन आता है।

संस्थान में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' मनाया जाएगा, जिसकी थीम 'सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी' रखा गया है। सप्ताह के प्रथम दिवस सत्यनिष्ठ प्रतिज्ञा ग्रहण की गई। आगामी सात दिनों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा, जिनमें भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, लघु नाटिका एवं लोकगीत प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता आदि प्रमुख हैं। इन सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना रहेगा।

कार्यक्रम में डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. विष्णु कुमार एवं संस्थान परिवार के सभी सदस्यों की सहभागिता रही।

## तेरहवां प्रेक्षा ध्यान शिविर का आयोजन

सिरियारी।

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के प्रेक्षा गृह में 13 (तेरहवां) प्रेक्षा ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। प्रेक्षा गीत के सामूहिक संगान के पश्चात् शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए मुनि चैतन्य कुमार अमन ने कहा- जीवन की महानतम उपलब्धि है- आत्म साक्षात्कार। प्रेक्षा ध्यान के प्रयोगों से इस दिशा में विकास किया जा सकता है। स्वयं के द्वारा

स्वयं को देखना ध्यान साधना का मुख्य प्रयोजन है। ध्यान एक साधन है इस साधन के द्वारा साधनाकर व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में कामयाब हो सकता है। बशर्ते जीवन की अनमोल निधी स्वास्थ्य के द्वारा मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को रोक कर ध्यान के क्षेत्र में विकास किया जाय। मुनिश्री धर्मेन्द्र कुमार जी ने साधकों का मार्गदर्शन करते हुए कहा- साधना का लक्ष्य है- भीतर की गहराईयों में पहुँचना। नियमित करके अभ्यास के द्वारा आगे बढ़ा

जा सकता है। समस्याएं जीवन में आती रहती हैं परन्तु सही मार्ग में आगे बढ़ने वाला अपना जीवन सफल बना लेता है। चित्त शुद्धि जो साधक का लक्ष्य है। संयम की चेतना को पुष्ट करने वाला समाधान खोज लेता है। कार्यक्रम में संस्थान की ओर से महावीर सिंह, प्रेक्षा साधक राजेन्द्र मोदी, हनुमान बरडिया, भंवरलाल जैन ने विचार प्रस्तुत किए। शिविर में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए गए। कार्यक्रम का संयोजक महेन्द्र जैन ने किया।

## विशेष ज्ञानशाला का आयोजन

ब्यावर।

पूज्य गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित ज्ञानशाला उपक्रम के अंतर्गत साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में 15 वर्ष और उससे कम आयु के बच्चों हेतु विशेष ज्ञानशाला का आयोजन मुथा भवन, ब्यावर में किया गया। जिसमें तेरापंथ समाज के 18 बच्चों ने भाग लिया।

उक्त ज्ञानशाला के आयोजन में तेरापंथ सभा के मनीष रांका, युवक परिषद के शेरसिंह मरलेच, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा चंद्रकांता

दुगड़ एवं मंत्री सुनीता सकलेचा का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञानशाला के दौरान साध्वीश्री जी द्वारा बच्चों को गुरुवंदन कैसे किया जाए इसकी विधि बताई गई साथ ही अहंम अहंम की वंदना फले प्रार्थना के साथ ज्ञानशाला की विधिवत शुरुआत की गई। ज्ञानशाला में बच्चों को 25 बोल में से 10 बोल, नमस्कार महामंत्र, साधु भगवंत को किस प्रकार विधिपूर्वक वंदन किया जाए वंदन पाठ, परमेष्ठी वंदन, तेरापंथ आचार्य परंपरा के 11 आचार्य के नाम जिन शासन के 24 तीर्थंकर परंपरा के नाम, गुरु वंदन पाठ,

सामायिक पाठ एवं सामायिक पारना का पाठ इत्यादि कंठस्थ करवाए गए।

ज्ञानशाला साध्वीश्री जी के द्वारा ज्ञानशाला के महत्व को समझाते हुए अभिभावकों के साथ बैठक कर ज्ञानशाला को अनवरत रूप से प्रत्येक रविवार को चलने हेतु इंदु भटेवरा, आशा रांका एवं इंदु मुथा पुरुष वर्ग में दयाराम एवं अभय सांखला को ज्ञानशाला संरक्षक/संरक्षिका के रूप में मनोनीत किया गया।

तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष मुकेश रांका द्वारा बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु पुरस्कार वितरन किया गया।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण



# 112वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित अणुव्रत दिवस

**नई दिल्ली।**

दिल्ली नगर निगम (सिविक सेंटर) स्थित केदारनाथ साहनी ऑडिटोरियम में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की 112 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान शिष्य डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार जी एवं मुनि श्री जागृतकुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत दिवस का आयोजन अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती रेखा गुप्ता मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार, विशिष्ट अतिथि श्री संदीप कपूर, पर्यावरण प्रबंधन सेवाएं समिति दिल्ली नगर निगम, श्री बाबू लाल गोलछा अध्यक्ष अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली श्री सुखराज सेठिया अध्यक्ष जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा-

दिल्ली, अणुव्रत गौरव श्री कन्हैया लाल जैन पटावरी, अध्यक्ष भगवान महावीर मेमोरियल समिति दिल्ली, समाज भूषण श्री मांगीलाल सेठिया, संयोजक तेरापंथ विकास परिषद, श्री संजय खटेड़ उपाध्यक्ष- श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा, राजा इकबाल सिंह, महापौर दिल्ली नगर निगम द्वारा की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार जी द्वारा आर्षवाणी नमस्कार महामंत्र से किया गया। अणुव्रत गीत का संगान अणुव्रत सदस्यों द्वारा, ज्ञान वाला के ज्ञानार्थियों द्वारा आचार्य तुलसी के जीवन पर प्रकाश, एवं महिलाओं द्वारा सामूहिक गीत की प्रस्तुति की गई। मुख्य अतिथि और अतिथियों को अणुव्रत पटका, अणुव्रत साहित्य और प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर डॉ. मुनि अभिजीत कुमारजी ने अपने उद्बोधन में आचार्य श्री तुलसी अणुव्रत आंदोलन

के विषय में अपने विचार रखे। मुनि श्री जागृतकुमार जी ने भी अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

माननीया मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कह- आचार्य तुलसी जी का अणुव्रत आंदोलन केवल उपदेशों का नहीं, बल्कि मानवता के उत्थान, आत्मसंयम और नैतिकता के पुनर्जागरण का सशक्त माध्यम है। जब व्यक्ति अपने आचरण में सत्य, करुणा और अनुशासन को अपनाता है, तभी समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होता है। यदि हम सभी अपने जीवन में छोटे-छोटे संकल्प जैसे स्वदेशी को अपनाना, पर्यावरण की रक्षा करना, सत्यनिष्ठा और नियमों का पालन करना आदि नियमों को अपने जीवन में उतार लें, तो यही छोटे व्रत समाज में बड़े और स्थायी बदलाव का आधार बन सकते हैं। मेयर राजा इकबाल सिंह ने अपने संबोधन में कहा -अणुव्रत अपने आप

जीवन में आ जाता है अगर हम अपने जीवन में संयम और अनुशासन अपना ले तो जीवन में बदलाव जरूर दिखेगा अणुव्रत और गुरुवाणी में बहुत समानता देखने को मिली हम सभी एक राष्ट्र और सौहार्द के लिए मिलकर कार्य कर रहे हैं। संदीप कपूर ने कहा कि अणुव्रत दिवस पर आचार्य तुलसी जी के जीवन को हम अपने दिनचर्या का हिस्सा बना ले तो अपने आप बदलाव महसूस करेंगे मैं अणुव्रत समिति और जैन श्वेतांबर तेरापंथ को बधाई देता हूं जिन्होंने अणुव्रत दिवस पर सभी को एक साथ जोड़ने का कार्य करने के साथ समाज सुधार में अपना योगदान दे रहे हैं। अणुव्रत समिति ट्रस्ट- दिल्ली के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा ने अपने स्वागत संबोधन में कहा - भैया दूज का आलौकिक पर्व, शुभ मंगल बेला एक ऐसी महान आत्मा एक शब्दातीत आत्मा युगपुरुष आचार्य श्री तुलसी का अवतरण

हुआ जिसने अशांत विश्व को शांति का संदेश दिया। तुलसी एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने स्वतंत्र भारत के सूर्योदय के साथ हिंसा और अनैतिकता के उफनते वेग को देखकर अणुव्रत का सूत्रपात किया। यही नहीं चारों ओर फैलती हुई हिंसा, अशांति, राजनैतिक विषमता को पनपते देख अणुव्रत को नव अभियान के रूप में आंदोलन की गति प्रदान की और शनैः शनैः यह आंदोलन समाज की व्यवस्थाओं की आधारशिला बन गई।

'अणुव्रत गौरव' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी एवं दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया का भी सार्वभौम वक्तव्य हुआ। आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक श्री बाबूलाल दुगड ने किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रमोद घोड़ावत ने कुशलता पूर्वक किया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी की मन की बात का भी प्रसारण किया गया।

## श्रमण भगवान महावीर का 2552वां निर्वाण कल्याणक महोत्सव

**किलपॉक, चेन्नई।**

चरम तीर्थंकर भगवान महावीर का 2552वां निर्वाण कल्याणक दिवस युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा-किलपॉक द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर भिक्षु निलयम में मुनि मोहजीत कुमार ने कहा-भगवान महावीर का जन्म भारतीय संस्कृति में अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह की चेतना के जागरण का जन्म है, आत्म-उत्थान की प्रेरणा का जन्म है, विज्ञान जगत के लिए खोज का जन्म है।

भगवान महावीर ने कहा था-अप्पणा सच्च मे सेज्जा। स्वयं सत्य खोजो। आज

का मानव पर की खोज में संलग्न है। उसका चिन्तन पदार्थ जगत के साथ जुड़ा हुआ है। ऐसे भगवान महावीर की आज के युग में अतीव प्रासंगिकता है।

उन्होंने जो सिद्धान्त दिये वे केवल सुनने-पढ़ने तक ही सीमित न रहे। आज के इस प्रसंग पर उनके कथनों को जीवन का अंग बनाने का प्रयास करें। समारोह में मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि महावीर का दर्शन परम वैज्ञानिक है। उन्होंने आत्मदर्शन की अनंत ऊंचाईयों और गहराइयों को प्रकट किया।

जहाँ तक आज का विज्ञान जगत पहुंचने का प्रयास कर रहा है। भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित तत्त्वदर्शन विराटता और सुक्ष्मता से अभिर्मंडित है। मुनि भव्यकुमार जी ने महावीर के जीवन दर्शन को व्याख्यायित किया।

## जप अनुष्ठान का सुंदर आयोजन

**गोरेगांव, मुंबई।**

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना भिक्षु स्वामी के जन्म के त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विश्व व्यापक अखंड ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान का तेरापंथ भवन-गोरेगांव के प्रांगण में मंगलवार रात्रि 8 से 9 बजे सामूहिक जूम लिंक द्वारा जप

अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल की कर्मठ अध्यक्ष डिंपल हिरण के कुशल नेतृत्व में एवं मंत्री प्रवीण चोरडिया के कुशल मार्गदर्शन एवं महिला मंडल की पूरी टीम के सहयोग से किया गया।

इस जप अनुष्ठान में महिला मंडल-गोरेगांव के साथ तेरापंथ सभा, युवक परिषद, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, कन्या मंडल आदि सामूहिक जप में जुड़े।

## तपस्या कर्म निर्जरा का महत्वपूर्ण साधन

**गंगाशहर।**

गोलछा परिवार में 'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनि कमलकुमार जी स्वामी ने तपस्वी बहिन कनक गोलछा के तप अनुमोदना का कार्यक्रम बड़े ही उल्लासमय वातावरण में आयोजित किया गया। मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने बहिन कनक गोलछा के मासखमण तपस्या की अनुमोदना में उनके निवास स्थान पर जाकर प्रवचन का लाभ प्रदान करवाया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए फरमाया की

तपस्या कर्म निर्जरा का शक्तिशाली साधन है और वह निर्जरा वर्तमान और भविष्य के जीवन में भी बदलाव लायेगी। तपस्या आत्म शुद्धि के लिए करनी चाहिये जिससे स्वास्थ्य, विचार, और व्यवहार, परिवार कारोबार आदि सब में नवीनता के दर्शन हो। जैन दर्शन में मोक्ष मार्ग के चार सरल रास्ते बताये गये हैं उनमें ज्ञान -दर्शन-चारित्र और तप है। तपस्या उच्च मनोबल के बिना संभव नहीं है। भगवान महावीर ने तप साधना व ध्यान साधना से ही अपनी आत्मा को मोक्षगामी बनाया। मुनि कमल

कुमार जी ने कहा कि ध्यान मानसिक तप है, अनुप्रेक्षा बाह्य तप है तपस्या से हमारी आत्मा को पोषण मिलता है। तपस्वी बहिन कनक गोलछा ने इस 31 दिवसीय (मासखमण तप) के अलावा 2 वर्षीतप एवं एक से पन्द्रह तक की तपस्या की लड़ी की हुई है। कनक देवी गोलछा उपासक तथा ज्ञानशाला गंगाशहर की प्रशिक्षिका भी है। मासखमण तपस्वी बहिन कनक देवी गोलछा के लिए साध्वीप्रमुखा जी का संदेश प्राप्त हुआ उसका वाचन सभा के उपाध्यक्ष पवन छाजेड ने किया।

## वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

**विजयनगर।**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद- विजयनगर द्वारा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी ठाणा -4 के पावन सान्निध्य में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट की अध्यक्षता में वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन हुआ।

साध्वीश्री द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, तेयुप अध्यक्ष विकास बाँठिया ने सभी का स्वागत किया। साध्वी संयमलता जी ने कहा जीवन एक पुरस्कार है, उपहार है, अवसर है, बच्चों का जीवन कोरा कागज है उस पर जैसा

चाहे चित्र उकेरा जा सकता है, बच्चों के कीमती जीवन को संस्कारित करें। साध्वीश्री ने स्वयं के वैराग्य जीवन की घटनाओं को बताते हुए बच्चों को प्रेरित किया, साथ ही बच्चों को दिन भर में 1 घंटे से अधिक मोबाइल उपयोग न करने का त्याग करवाया गया। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने भी साध्वीश्री की प्रेरणा से डिजिटल डिटॉक्स का त्याग किया। पवन मांडोट ने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व में बच्चों को त्याग एवं संकल्प करने हेतु प्रेरित किया एवं अभिभावकों को संकल्प करवाया कि अगर उनके परिवार में बच्चे दीक्षा लेने हेतु तैयार होते हैं तो वह उन्हें मना नहीं करेंगे। साध्वी मार्दवश्री जी ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि पदार्थ

जगत से आध्यात्मिक जगत की ओर जाने का मार्ग है- वीतराग पथ, बच्चे कलियों से फूल बनकर इस नंदनवन में सुवासित करें। सभी बच्चों को प्रायोजक मनोहरलाल जी-राकेश-मुकेश बाबेल द्वारा उपहार दिए गये। विजयनगर सभा अध्यक्ष मंगल जी कोचर ने शुभकामनायें संप्रेषित की। सभा ट्रस्ट से पुखराज श्रीश्रीमाल, अभातेयुप सेविनोद मुथा, गौतम खाब्या, कमलेश जी चोपड़ा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष महेंद्र टेबा, तेयुप प्रबंध मंडल से प्रदीप बाबेल, पवन जी बैद, अमित नाहटा, मनीष चावत, पीयूष ललवानी, विजयनगर ज्ञानशाला संयोजिका ममता मांडोट सहित ज्ञानशाला बच्चे एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।



## संधारा साधु का तीसरा मनोरथ, मोक्ष का सर्वोत्तम पथ

जयपुर।

मालवीय नगर स्थित अणुविभा केंद्र के पास समाधि स्थल पर तेरापंथ धर्म संघ की 'शासनश्री' साध्वी विनयश्री जी-द्वितीय (श्री डूंगरगढ़) के गुरुवार को संधारे का पांचवा दिन था। मुनि तत्त्वचि जी 'तरुण' ने संधारे के विषय में बताया कि संधारा साधु का तीसरा मनोरथ है और मोक्ष का सर्वोत्तम पथ है। उन्होंने कहा कि संधारा ग्रहण करने वाले के मन में न जीने की कामना, न मरने की इच्छा।

वह सिर्फ कर्म निर्जरा (कर्म काटने) की भावना से इसे स्वीकार करता है। कर्म संसार भ्रमण का कारण है। तप कर्म मुक्ति का साधन है। कर्म मुक्त आत्मा परम को और परम आत्मा ही परमात्मा कहलाती है। मुनि तत्त्वचि जी 'तरुण' ने मौके पर साध्वीश्री के संधारे के उपलक्ष में स्वरचित गीत का संगान किया तथा जयाचार्य जी की रचना 'आराधना'

की आठवीं ढाल गा कर सुनायी। साथ ही मुनि संभवकुमार जी ने आध्यात्मिक मंत्रों का जप अनुष्ठान करवा कर सभी को मंत्रमय बना दिया।

इस अवसर पर सेवारत साध्वी जगवत्सला जी, साध्वी अतुलप्रभा जी, साध्वी सहजयशा जी, राजस्थान सरकार के मंत्री गौतम दक की धर्मपत्नी सपना दक, विमला पोकरना, अविनाश पोकरना, अशोक पोकरना, ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजिका रितु टोडरवाल, उपासिका गुलाब बच्छावत, कांता बैद, पुष्पा बैंगानी, पिकी बैंगानी आदि उपस्थित थे। इसके साथ ही संधारत साध्वीश्री के दर्शन-सेवा करने वालों का दिन भर तांता लगा हुआ है। तेरापंथ महिला मंडल (शहर) और तेरापंथ महिला मंडल (सी-स्कीम) तथा तेरापंथ युवक परिषद सहित तेरापंथ और जैन समाज के श्रावक-श्राविकाएं अखंड जप अनुष्ठान में सहभागी बनकर स्वयं को धन्य बना रहे हैं।

## भक्तामर श्रद्धा व भक्ति का उत्कृष्ट रसायन है

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, बालोतरा के तत्वावधान में सजोडे दिव्य भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का मन्त्र एवं गरिमामय कार्यक्रम आयोजित हुआ। राजेश बाफना ने बताया दीपावली महापर्व के शुभ दिन जहां दो महापुरुषों से जुड़ा हुआ दिन है। भगवान श्री महावीर एवं भगवान श्रीराम के नाम का स्मरण किया जाता है भगवान महावीर स्वामी को आज के दिन मोक्ष प्राप्त हुआ और भगवान श्री राम 14वर्ष वनवास पूर्ण कर अयोध्या पधारे थे। इस शुभ दिन को साध्वीश्री द्वारा आध्यात्मिक मंत्रों उच्चारण करवाया गया इसमें भाई बहनों के जोड़े को स्वस्तिक के आकार में बैठाया गया। बैठे जोड़े सबके लिए आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन गए। साध्वीश्री जी ने विशेष ऊर्जा के साथ ऋद्धिमंत्रों एवं मंत्रों के साथ प्रभावोत्पादक अनुष्ठान करवाया। सभी अनुष्ठानकर्ताओं ने अनुपम ऊर्जा की अनुभूति की। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा - भक्तामर स्तोत्र आचार्य मानतुंग की वो रचना है जिसकी रचना उन्होंने काल कोठरी में बैठकर की। भगवान आदिनाथ के प्रति उनकी श्रद्धा

एवं भक्ति से चमत्कार घटित हुआ और वो काल कोठरी के अड़तालीस तालों से बाहर निकलकर आ गए। साध्वी श्री ने कहा- यह स्तोत्र श्रद्धा व भक्ति का वह उत्कृष्ट रसायन है, जिसके संगान मात्र से शरीर के रोम-रोम में नई स्फूर्ति का संचरण होता है। भक्तामर स्तोत्र ऊर्जा का अक्षय स्रोत है, इसकी साधना करने वाला कण-कण में ऊर्जा की अनुभूति करता है। यह कल्पवृक्ष के तुल्य है, जो इसकी साधना करने वाले साधकों की कामनाओं एवं मनोरथों को पूर्ण कर सकता है। भगवान आदिनाथ की यह स्तुति विघ्नविनाशक, मंगलकारक एवं आनंदप्रदायी है। भक्तामर अनुष्ठान के द्वारा प्राण ऊर्जा एवं वातावरण में सचेतनता का जागरण होता है। हमारे जीवन में भी अनेक समस्याओं के ताले लगे हुए हैं। उन सारे तालों की चाबी है भक्तामर स्तोत्र। हर भाई बहन को यह स्तोत्र प्रतिदिन करना चाहिए, जीवन में खुशहाली आ सकती है। साध्वीश्री ने कहा-तेरापंथी सभा ने बहुत कम समय में सुन्दर व्यवस्था कर कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की है। साध्वी कर्णिका श्रीजी एवं डॉ साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंगल संगान किया। सभाध्यक्ष महेन्द्र वेदमुथा ने पूरी परिषद की ओर से साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।



संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि



### नामकरण संस्कार

- **पूर्वांचल कोलकाता।** मुदित लूणिया एवं दिव्या लूणिया प्रवासी पूर्वांचल कोलकाता के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से 163 B, लेकटाउन, कोलकाता उनके निवास स्थान पर हुआ। जैन संस्कारक, प्रेक्षा प्रशिक्षक तथा टीपीएफ के अध्यक्ष राकेश सिंधी ने बड़े ही सुंदर और पूर्ण मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संचालित किया।
- **गंगाशहर।** धीरज कुमार- संतोष देवी सिंधी निवासी गंगाशहर के सुपुत्र एवं पुत्रवधू अभिषेक-निशा सिंधी के नवजात पुत्ररत्न का नामकरण संस्कार सिंधी गली पुरानी लाइन, गंगाशहर में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक देवेन्द्र डागा, विनीत बोथरा एवं विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण संपन्न करवाया।

## 'जय जश कर्ता- विघ्नहर्ता': एक प्रेरणादायी संगीतमय नाटकीय प्रस्तुति

गांधीनगर, बैंगलोर।

चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य के प्रेरणादायी जीवन पर आधारित भावपूर्ण नाट्य प्रस्तुति 'जय जश कर्ता- विघ्नहर्ता' का आयोजन समण संस्कृति संकाय (जैन विद्या) के ज्ञानार्थियों द्वारा, डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा-२ के पावन सान्निध्य में किया गया। मंचन में आचार्यश्री के शैशव काल, मुनि जीवन, युवाचार्य काल और आचार्य पद के प्रेरक प्रसंगों को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया। उनके योगप्रेम, अनासक्त भाव, संघ विकास में योगदान तथा आध्यात्मिक संघर्षों को भावनात्मक ढंग से दर्शाया गया।

मुख्य पात्रों — चिरायु मुथा, आदित्य पितलिया, हर्षित गुगलिया, आदित्य सेठिया, यश भंडारी, जितेंद्र कोठारी,

एकता सिसोदिया, आदि — के अभिनय ने प्रस्तुति को जीवंत बनाया। इस प्रस्तुति में मुख्य गायक ऋषि दुगड़ की मधुर आवाज और वाचक यश सेठिया के प्रभावशाली कथन ने मंचन को और गहराई दी।

पद्य संगीत रचना में विनोद कोठारी का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम से पूर्व नन्हे बालकों द्वारा प्रस्तुत मनमोहक आराधना और आचार्य भिक्षु के दृष्टांत पर नाटक ने दर्शकों के हृदय जीत लिए, जिसकी सफलता में प्रशिक्षिका सपना सोलंकी और अनिता नाहर का विशेष योगदान रहा।

मुख्य प्रशिक्षक हेमंत छाजेड़, प्रशिक्षिका प्रभा सेठिया, मेना बांठिया, संगीता चिंडालिया, समता गिडिया, संगीता सिसोदिया तथा कार्यकर्ता हिमांशु चिंडालिया, अरविंद पोखरणा और पूजा

सकलेचा के सहयोग से यह आयोजन सफल रहा। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, समण संस्कृति संकाय दक्षिण कर्नाटक के आंचलिक संयोजिका पिकी टेबा, जैन विद्या (गांधीनगर) के केंद्रीय व्यवस्थापक कमलेश पितलिया, जैन विद्या के स्थानीय संयोजक जुगराज श्रीश्रीमल, स्थानीय सह-संयोजक गौतम डोसी, तथा कार्यक्रम के प्रायोजक मदन कैलाश बोराणा और अरविंद प्रकाश बाफना सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे। सभी ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया, उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की, और पूरे वातावरण को प्रेरणादायी बनाया। कार्यक्रम के अंत में संतों ने इसे ऐतिहासिक प्रस्तुति कहकर ज्ञानार्थियों की सराहना की एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

## भिक्षु प्रीमियर लीग प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर द्वारा साध्वी संयमलता जी ठाणा -4 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक महामना भिक्षु के त्रिशताब्दी अवसर पर भिक्षु प्रीमियर लीग प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन- विजयनगर में किया गया। साध्वीश्री द्वारा मंगल पाठ के द्वारा प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। संचालक हर्ष मांडोत एवं प्रिंस मांडोत द्वारा प्रतिभागियों को चार टीम में विभक्त किया गया, जिनका नाम क्रमशः बगड़ी के सुरमा, सिरियारी के सितारे, कंटालिया के धुरंधर, केलवा के महारथी था, टीमों को क्रिकेट के नियमों से भिक्षु के

जीवन पर आधारित विभिन्न प्रश्न पूछे गए, प्रथम राउंड में केलवा के महारथी एवं बगड़ी के सुरमा विजेता रही जिनके बीच फाइनल मैच खिलाया गया, जिसमें केलवा के महारथी इस प्रतियोगिता की विजेता रहे। साध्वी संयमलता जी ने किसी भी कार्य को सफल बनाने में श्रम, समय एवं संगठन की आवश्यकता होती है तेयुप एवं किशोर मंडल ने पूरी टीम के साथ अच्छी और सुंदर प्रस्तुति की, ऐसे ही युवा पीढ़ी आध्यात्मिकता की सुंदर प्रस्तुति करते रहे। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा प्रतियोगिता धर्म को नए तरीके से प्रस्तुत करने का सरल माध्यम है, AI के युग में किशोर आध्यात्मिकता के मार्ग पर ऐसे ही आगे बढ़ते रहें। ज्ञातव्य है कि इस प्रतियोगिता को सफलतम संपादित

करवाने में साध्वी मार्दवश्री जी का विशेष मार्गदर्शन रहा। किशोर मंडल संयोजक दर्शन बाबेल, रिदम चावत, हर्ष मांडोत एवं प्रिंस मांडोत का सराहनीय श्रम रहा। साथ ही किशोर मंडल प्रभारी पीयूष ललवानी का सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में विजेता टीम सहित सभी प्रतिभागियों को प्रायोजक-मनोहर लाल-राकेश-मुकेश जी बाबेल परिवार द्वारा पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर तेरापंथ की सभा विजयनगर अध्यक्ष-मंगल कोचर, तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर अध्यक्ष विकास बाँठिया, प्रबंध मंडल से पवन बैद, अमित नाहटा, महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया, तेयुप हनुमंत नगर अध्यक्ष स्वरूप चोपडा सहित श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

# अधिवेशन में 22 पुरस्कारों के साथ पूरे देश में रचा इतिहास

गंगाशहर।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में आयोजित अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 59वें राष्ट्रीय अधिवेशन में गंगाशहर तेयुप ने उल्लेखनीय उपलब्धि दर्ज करते हुए विभिन्न श्रेणियों तथा व्यक्तिगत स्तर पर कुल 22 सम्मान अर्जित किए, जिससे गंगाशहर का नाम देशभर में गौरवान्वित हुआ।

इन पुरस्कारों का सार्वजनिक प्रस्तुतीकरण तथा व्यक्तिगत अलंकरण समारोह आज प्रातः तेरापंथ भवन, गंगाशहर में तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी की उपस्थिति में व्याख्यान कार्यक्रम के दौरान सम्पन्न हुआ। तेयुप अध्यक्ष ललित राखेचा ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता

व्यक्त करते हुए कहा कि मुनि कमल कुमार जी का गंगाशहर में चातुर्मास से सुशोभित होना शहर और संगठन, दोनों के लिए अत्यंत सौभाग्य का विषय है। उन्होंने बताया कि इसी पवित्र प्रेरणा और सतत मार्गदर्शन से सभी आयोजन सहज और सफल रूप से पूर्ण हो सके। उन्होंने पुरस्कारों की जानकारी देते हुए कहा कि सेवा क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त हुआ, जैन संस्कार में स्टार परफॉर्मर परिषद अवार्ड मिला, MBDD के श्रेष्ठ आयोजन के साथ-साथ विशेष उपस्थिति और सहयोग का सम्मान प्राप्त हुआ। सम्यक दर्शन कार्यशाला तथा भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजन को विशेष सराहना मिली। इसी प्रकार CPS आयोजन, 'अभ्यर्थना एक क्रांति—आचार्य भिक्षु जप' के 24 घंटे

निरंतर संपादन, तथा TTF रील मेकिंग प्रतियोगिता में सहभागिता सम्मान भी गंगाशहर के नाम रहा।

व्यक्तिगत उपलब्धियों में भी गंगाशहर ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। जैन संस्कारकों की अखिल भारतीय श्रेणी में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान क्रमशः देवेंद्र डागा, पवन छाजेड़ और विपिन बोथरा ने प्राप्त किए। MBDD राज्य प्रभारी के रूप में पीयूष लूनिया और विजेंद्र छाजेड़ को सम्मान मिला, वहीं 'कौन बनेगा चैंपियन' प्रतियोगिता में थली राज्य प्रभारी के रूप में ललित राखेचा को सम्मानित किया गया। सम्यक दर्शन कार्यशाला में उत्कृष्ट सहयोग के लिए अरुण नहाटा, मांगीलाल बोथरा, अधिवक्ता कन्हैयालाल बोथरा और मयंक सेठिया को सम्मान प्राप्त हुआ।

गोचरी सेवा क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए रोहित बैद को राष्ट्रीय स्तर पर विशेष सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर प्रेरणादायी संदेश देते हुए मुनि श्री कमल कुमार जी ने कहा कि विनम्रता और अनुशासन ही प्रगति का मुख्य आधार हैं और गंगाशहर तेयुप द्वारा प्राप्त 22 सम्मान इसका स्पष्ट प्रमाण हैं। उन्होंने कहा कि यदि युवाओं का व्यक्तित्व एवं विचार सकारात्मक दिशा में विकसित हो जाए तो समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति स्वतः सुनिश्चित हो जाती है। उन्होंने श्रावक समाज से आह्वान किया कि वे अपने परिवार के युवाओं, किशोरों, महिलाओं और बालिकाओं को स्थानीय संस्थाओं से जोड़ें, जिससे उनका समग्र विकास संभव हो सके।

कार्यक्रम के दौरान मंत्री मांगीलाल बोथरा ने जानकारी दी कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पवन मांडोट ने राष्ट्रीय टीम में गंगाशहर के पीयूष लूनिया और ललित राखेचा का चयन किया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय सम्यक दर्शन कार्यशाला प्रभारी मनीष बाफना, गोचरी सेवा सम्मान प्राप्त रोहित बैद तथा उपाध्यक्ष देवेंद्र डागा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

तेयुप गंगाशहर के निवर्तमान अध्यक्ष महावीर फलोदिया ने समारोह में उपस्थित होकर सभी विजेताओं को शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम में गंगाशहर की विभिन्न सभा संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित श्रावक-श्राविका समाज की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही।

## संक्षिप्त खबर

### आचार्य श्री तुलसी का 112 वां जन्म दिवस

नोखा। इस सदी में आचार्य श्री तुलसी महान राष्ट्रसंत, क्रांतिकारी, युगदृष्टा आचार्य हुए। उन्होंने मानव जाति को अनेक अनुदान दिए। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, जीने की कला उन्होंने बतलाई। 22 वर्ष की युवावस्था में आचार्य बन गए - उनका ओज, तेज, पवित्र आभामंडल अद्वितीय था। यह उद्गार 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी ने 112 वें जन्म दिवस अणुव्रत दिवस पर कहे। महिलामंडल द्वारा श्रद्धा गीत द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी प्रभातप्रभा जी, उपासक अनुराग बैद, कवि इंद्रचंद बैद, महिला मंडल अध्यक्षा प्रीति मरोठी, पुष्पा देवी पारख, मंजू बैद, राजकुमारी मरोठी, लीला मरोठी, सभा मंत्री मनोज घीया, लाभचंद छाजेड़ ने आचार्य श्री तुलसी के मार्मिक प्रसंग सुनाते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतृत्व पर प्रकाश डाला।

### सामूहिक ॐ भिक्षु महाजप अनुष्ठान

इरोड। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के निर्देशन में इरोड महिला मण्डल द्वारा, अध्यक्षा समता जीरावला के नेतृत्व में, स्थानीय तेरापंथ भवन में सामायिक सहित सामूहिक 'ॐ भिक्षु' महाजप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। विश्व स्तरीय तथा विश्व शांति हेतु समर्पित 'ॐ भिक्षु - जय भिक्षु' का जप प्रातः 11 से 12 बजे तक शांतिमय एवं दिव्य वातावरण में सम्पन्न हुआ। मुमुक्षु हनुमानमल दुगड़ का सान्निध्य प्राप्त हुआ। महाजप अनुष्ठान में महिला मण्डल की सभी बहनों ने सक्रिय सहभागिता निभाकर कार्यक्रम को सफल बनाया। श्रावकों की भी उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कुल 32 जप-आराधकों ने इस अनुष्ठान में भाग लिया। आभार ज्ञापन महिला मण्डल की मंत्री कविता सिंघी द्वारा व्यक्त किया गया।

### विशेष योगदान के लिए सम्मानित

गुडियातम। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (ABTYP) के 59वें वार्षिक अधिवेशन, कोबा (अहमदाबाद) में तेरापंथ युवक परिषद गुडियातम को MBDD रक्तदान 2.0 में उत्कृष्ट प्रदर्शन और विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस अभियान के तहत गुडियातम जैसे छोटे नगर में 237 यूनिट रक्त एकत्रित किए गए, जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही। इस सफलता के पीछे सभा के सह मंत्री राजेश गिरिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष भरत गिरिया, मंत्री कमलेश गिरिया, तथा पूरी युवक परिषद टीम का समर्पण और परिश्रम रहा। उनके संयुक्त प्रयासों से यह रक्तदान शिविर एक प्रेरणादायी मिसाल बन गया।

## परिवार में प्रेम का निवास, देता स्वर्ग सा आभास

चेन्नई।

ट्रिप्लीकेन स्थित तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के शिष्य मुनि दीपकुमार ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में परिवार में न हो तकरार विषयक कार्यशाला का आयोजन ट्रिप्लीकेन तेरापंथ ट्रस्ट के तत्वावधान में संपन्न हुआ। मुनि दीपकुमार ने कहा- जिस परिवार में प्रेम है, वह मानो धरती पर स्वर्ग है। जहां लोगों के बीच प्रेम, आनन्द, आदर, सम्मान, आत्मीयता व सहभागिता के पुष्प सुशोभित रहते हैं, समझ लीजिये वह स्वर्ग है। मानव जीवन में इन सारे संस्कारों का सृजन उसी तरह होता है, जैसे बगिचे में भांति-भांति के पुष्प खिला करते हैं। जहां

परिवार में टुटन-घुटन, द्वेष - कलह, मनोमालिन्य है, समझिए वहां नरक का बसेरा है। आज पारिवारिक संबंध पारे की तरह बिखर रहे हैं। आपस में दूरियां हैं, सबकी अपनी-अपनी मजबूरियां हैं। अविश्वास और संदेहों के घेरे में सभी जी रहे हैं। एक मकान में रहते हुए भी सभी अपने-अपने दायरों में सिमटे हुए हैं। पिता-पुत्र के बीच संवाद नहीं, भाई-भाई के बीच बोलचाल नहीं, सास-बहू में कटुता है, देवरानी-जेठानी में अनबन है। घर घर में कलह की भट्टियां सुलग रही हैं। मुनिश्री ने इस के निराकरण में फरमाया - 'परिवार में ना हो तकरार' के लिए जरूरी है सामंजस्य का भाव प्रतिपल बना रहे। क्यो कि शांति चाहिये तो दुसरा कोई विकल्प नहीं है। सबकी

अलग-अलग रुचियां होती हैं। उसमें सामंजस्य बना रहे तो खुशहाली रह सकती है। सम्मान की भावना रहनी चाहिये। बड़ों के प्रति सम्मान बना रहे। माता-पिता का कितना उपकार होता है। उन्हें पूरा सम्मान मिलना चाहिए। एकता और प्रेम परिवार की बहुत बड़ी ताकत होती है। मुनिश्री ने पारिवारिक संबंधों में सौहार्दता पर विस्तार से बताया। मुनिश्री काव्यकुमार ने कहा - पारिवारिक शांति के लिए हर व्यक्ति को सहनशील बनना जरूरी है। एक दुसरे को सहन करने से ही परिवार में तकरार की संभावना नहीं रहेगी और स्वर्ग सा सुंदर घर-परिवार बन जायेगा। मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

## युवती बहनों द्वारा सखी समिति का आयोजन

इचलकरंजी।

विजयनगर, बैंगलोर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'सखी समिति - उड़ान संस्कारों की' के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर की युवतियों द्वारा समिति का आयोजन किया गया।

सभी युवतियों ने अपना परिचय देते हुए समिति का शुभारंभ ॐ भिक्षु के जप

के साथ किया। 'युवतियों द्वारा क्या डिग्री से मिलती है हर डगर' विषय पर खुली चर्चा करते हुए अपने विचारों को व्यक्त किया।

बहनों ने आपस में कई रोचक गेम्स भी खेलें तथा अपनी-अपनी रुचि के विषय में एक दूसरे को बताया। योगा ट्रेनर मोनिका ने योगा टिप्स दिए तथा एक डाइटिशियन बहन ने अपने अनुभव शेयर करते हुए हेल्दी डाइट के विषय में

बताया। लगभग एक से डेढ़ घंटे चलने वाली इस समिति में बहनों में एक दूसरे को जाना, समझा तथा आपस में अच्छी बॉन्डिंग बनायी। सभी बहने समिति आयोजन से काफी उत्साहित नजर आई तथा आगे भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाएं ऐसे भाव रखें। समिति आयोजन में संयोजिका श्वेता नाहटा का विशेष श्रम रहा। समिति में लगभग 15 बहनों ने भाग लिया।



## संक्षिप्त खबर

### आचार्य श्री भिक्षु जन्म स्थली का भ्रमण

**कंटालिया।** अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पवन मांडोत एवं प्रबंध मण्डल के शपथ ग्रहण करते ही सर्व प्रथम आचार्य श्री भिक्षु जन्म स्थली दर्शनार्थ कंटालिया पधारे। जहाँ व्यवस्थापक प्रकाश चंद सेठिया, पूर्व सरपंच मनोहर सिंह नव मनोनीत अध्यक्ष एवं पूरी टीम का दुपट्टे एवं तिलक कर स्वागत किया। इस अवसर पर नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा, अभिनंदन नाहटा, महामंत्री सौरभ पटावरी, सहमंत्री पवन नौलखा, अंकुर लूणिया, कोषाध्यक्ष विकास बोथरा संगठन मंत्री रोहित कोठारी, कार्यसमिति सदस्य रोशन नाहर तेयुप साथी मुकेश ओस्तवाल मौजूद रहे।

### श्री पैसठिया छंद अनुष्ठान

**घाटकोपर।** 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में पैसठिया छंद का विशेष अनुष्ठान हुआ। महिला मंडल की उपस्थिति अनुकरणीय रही। सभी के चेहरे आभामंडल की एकाग्रता में अवस्थित थे। इस पैसठिया छंद से अभिनव शक्ति का सृजन हुआ। साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि इस अनुष्ठान से तन-मन की शक्ति बढ़ती है। साध्वी मंजूरेखा जी ने कहा कि अनुष्ठान सिखाता है कैसे जीना और कैसे रहना है। लयबद्ध तरीके से अनुष्ठान को किया गया। अनुष्ठान में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला सभी की उपस्थिति रही।

### ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव 2025 का आयोजन

**मैसूर।** परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी सिद्धप्रभाजी ठाणा-४ के सान्निध्य में मैसूर तेरापंथ भवन में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वाधान में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव मनाया गया। जिसमें लगभग 125 बच्चे और 30 प्रशिक्षिकाएं उपस्थित रही। बच्चों द्वारा 'अहंम अहंम की वंदना' से मंगलाचरण के पश्चात् तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश दक द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। तेरापंथ महासभा के सदस्य विमल पितलिया, ज्ञानशाला प्रभारी महावीर मारू क्षेत्रीय संयोजिका कांता नौलखा ने अपने वक्तव्य दिए। इस अवसर पर मैसूर, नंजुनगुड, KR पेट और पांडुरूप के ज्ञानार्थियों ने आचार्य भिक्षु के दृष्टांत, 5 महाव्रत, wastage of food एवं misuse of mobile जैसे अन्य विषयों पर बहुत ही सुंदर, रोचक और ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका चंदा देरासरिया एवं मुख्य प्रशिक्षिका पूनम गुगलिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विगत दो वर्षों का लेखा जोखा भी प्रस्तुत किया गया। साध्वी सिद्धप्रभाजी के मंगल उद्बोधन के पश्चात् पूनम गुगलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में केआर पेट से 1 सहयोगी प्रशिक्षिका और 7 बच्चे, नंजुनगुड क्षेत्र से 6 प्रशिक्षिकाएँ और 10 बच्चे, पाण्डुपूरा क्षेत्र से 2 प्रशिक्षिकाएँ और 6 बच्चे शामिल हुए। बच्चों की प्रस्तुतियों ने अभिभावकों का मन मोह लिया।

### ॐ भिक्षु महाजप अनुष्ठान का आयोजन

**जसोल।** अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल के तत्वावधान साध्वी रतिप्रभा जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में मंडल अध्यक्षा ममता मेहता की अध्यक्षता में सुबह 5 बजे से 7 बजे तक ॐ भिक्षु महाजप अनुष्ठान जाप का आयोजन पुराना ओसवाल भवन, जसोल में आयोजित किया गया। मंत्री जय श्री सालेचा ने बताया कि इस जप अनुष्ठान में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल के सदस्य एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक मंडल, भंसाली महिला मंडल सहित सभी संस्था के सदस्यों ने जप में अपनी भागीदारी निभाई। जिसमें करीब 450 सदस्यों ने भाग लिया।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्नेहगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

## भक्तामर कार्यशाला का आयोजन

**हैदराबाद।**

आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदूषी सुशिष्या साध्वी डॉ. गवेषणा श्री जी (ठाणा-4) के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी, सिकंदराबाद में 'भक्तामर स्तोत्र कार्यशाला — Power of Bhaktamar' का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद तथा संगम फाउंडेशन, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। भक्तामर स्तोत्र की महिमा के विशद वर्णन हेतु आध्यात्मिक हीलर एवं ग्लोबल मदर डॉ. मंजू जैन, नागपुर से पधारी। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी श्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात् तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद की बहनों द्वारा प्रेरणा-गीत का मधुर संगान किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा नमिता सिंधी ने सभी आगंतुक श्रावक-श्राविकाओं का

हार्दिक स्वागत किया। संगम फाउंडेशन की अध्यक्ष नीरज जैन ने डॉ. मंजू जैन का परिचय देते हुए उनके द्वारा भक्तामर स्तोत्र के माध्यम से सैकड़ों लोगों की असाध्य बीमारियों, मानसिक अशांति, व्यवसाय तथा संतान-संबंधी समस्याओं के सफल समाधान का उल्लेख किया। योग एवं वेलनेस विशेषज्ञ नवीता नाहटा ने सत्र के आरंभ में ध्यान-प्रयोग करवाया। इसके पश्चात् डॉ. मंजू जैन ने भक्तामर स्तोत्र के 48 श्लोकों तथा उनके बीज मंत्र एवं ऋद्धि मंत्र का उच्चारण करवाते हुए प्रत्येक श्लोक का अर्थ, महत्व व जीवन में उनके प्रयोग की विधि समझाई। उन्होंने बताया कि भक्तामर स्तोत्र की साधना द्वारा असाध्य रोग, न्यायालय संबंधी जटिलताएँ, नौकरी-व्यवसाय की बाधाएँ तथा जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। इसके साथ ही उन्होंने सभी उपस्थित भाई-बहनों को हीलिंग भी प्रदान की। साध्वी डॉ. गवेषणा श्री जी ने

कहा कि आचार्य मानतुंग द्वारा तीर्थंकर आदिनाथ की स्तुति में रचित भक्तामर स्तोत्र यदि शुद्ध विधि-विधान एवं श्रद्धा के साथ साधना रूप में किया जाए तो इसका अद्भुत प्रभाव अनुभव होता है। उन्होंने साध्वी श्री मयंक प्रभा जी के संयम-पर्याय के 25 वर्ष पूर्ण होने पर श्रावक-समाज द्वारा की गई अनुमोदना का भी उल्लेख किया। कार्यक्रम के दौरान तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद द्वारा मंजू जैन का सम्मान किया गया। कार्यशाला की संयोजिका पायल पारख, शकुंतला बुच्चा एवं संतोष गुजरानी रहीं। कार्यक्रम के प्रायोजक भंवरी लाल, अक्षय, गिरीश कोठारी, प्रेमचंद लाड, देवी, राजेश व सविता सोनी परिवार रहे। सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में लगभग 400 से अधिक श्रावक-समाज की उपस्थिति रही। अंत में मंत्री निशा सेठिया के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

### 59वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'एकत्व' में 13 सम्मान प्राप्त

**जसोल।**

राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा गुजरात के अहमदाबाद स्थित कोबा विश्व भारती ध्यान केंद्र में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में संपन्न 59वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'एकत्व' में शाखा मूल्यांकन के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, राजाजीनगर को सत्र 2024-25 में 'विशाल श्रेणी' में सेवा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु देश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इस उपलब्धि के साथ परिषद को कुल 13 विशिष्ट सम्मान प्रदान किए गए। सम्मानों में—चोका सत्कार, जैन संस्कार विधि में स्टार परफॉर्मर परिषद, कॉन्फिडेंट पब्लिक

स्पीकिंग (सीनियर व जूनियर), भिक्षु विचार दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला, तेरापंथ टास्क फोर्स कार्यशाला, 'अभ्यर्थना एक क्रांति' 24 घंटे जप, 'केबीसी-कौन बनेगा चैम्पियन' में राष्ट्रीय द्वितीय स्थान, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में उत्कृष्ट कार्य, आचार्य तुलसी डे-केयर हॉस्पिटल शुभारंभ, 'फिट युवा-हिट युवा' में राष्ट्रीय स्टार परफॉर्मर, 24 कैप आयोजन तथा एमबीडीडी में उत्कृष्ट कार्य शामिल रहे।

परिषद ने वर्षभर सेवा, संस्कार एवं संगठन क्षेत्र में अनेक प्रभावी कार्यक्रमों का सफल क्रियान्वयन किया, जिसके लिए सभी युवा साथियों, किशोरों एवं दानदाताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की

गई। अधिवेशन में अध्यक्ष श्री जितेश जी दक, निवर्तमान अध्यक्ष श्री कमलेश जी चौरडिया, अभूतपूर्व अध्यक्ष श्री कमलेश जी गन्ना, श्री सतीश जी पोरवाड़, शाखा प्रभारी श्री दिनेश जी मरोठी, श्री जयंतीलाल जी गांधी, मंत्री श्री अनिमेष जी चौधरी एवं श्री जितेंद्र जी कोठारी ने सहभागिता दर्ज की। प्रतिनिधिमंडल ने कोबा में विराजित पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी, साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी, मुख्य मुनि श्री महावीर कुमारजी, तेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमारजी एवं साधु-साध्वियों के दर्शन-सेवा का लाभ लिया तथा परिषद की वार्षिक गतिविधियों का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

## ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान का आयोजन

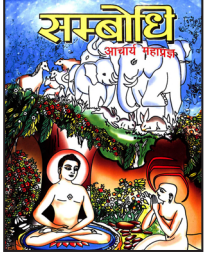
**इचलकरंजी।**

अखिल भारतीय महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'ॐ भिक्षु' जप अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्वारा आज तेरापंथ भवन, इचलकरंजी में सानंद सम्पन्न हुआ। तेरापंथ धर्म संघ के प्रथम आचार्य, आचार्य श्री भिक्षु के जन्म की त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विश्वव्यापी ॐ भिक्षु

अखंड महाजप 5 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। इसी क्रम में इचलकरंजी तेरापंथ महिला मंडल ने दिनांक 15.10.25 को सुबह 8 से 9 बजे तेरापंथ भवन, इचलकरंजी में जप का आयोजन किया। यह मंत्र महापरोपकारी तथा विघ्नों का नाश करने वाला माना जाता है। निर्धारित समयानुसार प्रातः 8 बजे जप का शुभारंभ किया गया। Zoom ऐप के माध्यम से चल रहे अखंड जाप के सीधे प्रसारण के साथ उपस्थित सभी सदस्यों ने

गहन तल्लीनता से जाप किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महासभा के कार्यसमिति सदस्य पुष्पराजसंकलेचा, अभातेमम की कार्यकारिणी सदस्य एवं अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल सहप्रभारी जयश्री जोगड, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक बाफना, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल छाजेड़, ज्ञानशाला संयोजिका रजनी पारख, अणुव्रत समिति के मंत्री संतोष भंसाली तथा प्रेक्षा इंटरनेशनल से विकास सुराणा उपस्थित रहे।

## संबोधि

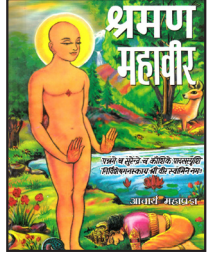


## परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

## श्रमण महावीर

क्रान्ति का  
सिंहनाद

## योग : क्या और कैसे?

## योग : एक अनुचिंतन

जैन साहित्य में योग शब्द का उल्लेख अनेक स्थलों पर हुआ है। मुख्यतया योग शब्द मन, वाणी और शरीर की प्रवृत्ति के अर्थ में प्रचलित है। योग-दर्शन का उद्देश्य भी मन, वाणी और शरीर की प्रवृत्तियों का संयमन है। इस दृष्टि से वहां भी यदि उसका अर्थ वही ग्रहण करें तो कोई आपत्ति नहीं होती। 'जोग' च समणधम्ममि जुंजे अनलसो धुवं'- साधक आलस्य को त्यागकर सतत अपने योग (मन, वाक् और शरीर की प्रवृत्ति) को समत्व-साधना, श्रमण-धर्म में योजित करे। यह कथन भी किसी न किसी विधि का सूचक है।

जैन आचार्यों ने दर्शन, ज्ञान और चरित्र को योग कहा है। योग शब्द का प्रतिपाद्य और प्राप्य जो है वह दर्शन, ज्ञान और चरित्र ही है। जीवन की परिपूर्ण विकसित अवस्था इस त्रिवेणी का संयोग है। ऐसी कोई साधना-पद्धति नहीं है जो अज्ञान, मिथ्यात्व और आचरण को रूपान्तरित न करे। जिस साधना से व्यक्ति जैसा था वैसा ही रहता है तो समझना चाहिए कि कहीं भूल है। समस्त साधना-मार्ग उसी दिशा में ले जाते हैं।

## तप है योग

योग शब्द के द्वारा जो विधेय है, जैन परम्परा में वह तप के द्वारा लक्ष्य है। योग के स्थान पर 'तप' शब्द अधिक प्रचलित रहा है। योग के जैसे आठ अंग हैं, वैसे ही तप के द्वादश भेद हैं। यह शब्द स्वयं महावीर द्वारा प्रयुक्त है। 'तवेण परिसुज्झई' - तप से शुद्धि होती है, कर्मों का निर्जरण होता है। जैन-साहित्य से जिनका यत्किंचित् परिचय है वे इसे सहजतया समझते हैं। अनेक स्थलों पर आगम और आगमेतर साहित्य में इसकी विशद चर्चा उपलब्ध है। निःसन्देह यह साधना-पद्धति के रूप में प्रचलित रहा है।

कालान्तर में संभवतया वह पद्धति विस्मृत हो गई और उसके भेद प्रभेद रह गए। प्रयोग छूट गया। प्रयोग के बिना किसी भी चीज का महत्त्व नहीं रहता। वह केवल रूढ़ हो जाती है।

आज व्यक्ति तप के समस्त अंगों की साधना न कर केवल दो-चार पूर्ववर्ती अंगों को अपनाकर तपस्वी या धार्मिकता का गौरव प्राप्त करते हैं। तप शब्द सामने आते ही व्यक्ति का ध्यान सीधा तपस्या-भूखे रहना, उपवास की ओर चला जाता है। महावीर की प्रतिमा भी जनता के सामने केवल दीर्घ-तपस्वी और कष्ट-सहिष्णु के रूप में खड़ी की। इस चरित्र चित्रण के साथ-साथ अधिक-से-अधिक तप, उपवास आदि करने पर बल दिया जाने लगा। तपस्वियों की महत्ता और उत्साह संवर्द्धन के लिए विविध समारोह तथा स्तुति-गीत प्रदर्शित किये जाने लगे, जिससे सहजतया सामान्य व्यक्तियों का मन लालायित होने लगा।

(क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

## आचार्यश्री रायचंद जी युग

## साध्वीश्री गंगाजी (पाली) दीक्षा क्रमांक 197

साध्वीश्री तपस्विनी साध्वी थी। अपने अनेक तप किए पर जिनका विवरण उपलब्ध है वह इस प्रकार है- सं. 1910 में 18 दिन, सं. 1911 में मासखमण, 1912 में 60 दिन का तप, 1913 में 14 दिन, 1914 में 130 दिन, 1915 में मासखमण, 1916 में 16 दिन का तप किया।

- साभार : शासन समुद्र -

कोणिक को इस बात का पता चला। उसने महाराज चेटक के पास दूत भेजकर हार, हाथी और वेहल्लकुमार को लौटाने की मांग की। चेटक ने वह ठुकरा दी। उसने दूत के साथ कोणिक को सन्देश भेजा- 'तुम और वेहल्लकुमार दोनों श्रेणिक के पुत्र और चेल्लणा के आत्मज हो, मेरे धेवते हो। व्यक्तिगत रूप में तुम दोनों मेरे लिए समान हो। किन्तु वर्तमान परिस्थिति में वेहल्लकुमार मेरे शरणागत है। मैंने वैशाली-गणतंत्र के प्रमुख के नाते उसे शरण दी है, इसलिए मैं हार, हाथी और वेहल्लकुमार को नहीं लौटा सकता। यदि तुम आधा राज्य दो तो मैं उन तीनों को तुम्हें सौंप सकता हूँ।'

कोणिक ने दूसरी बार फिर दूत भेजकर वही मांग की। चेटक ने फिर उसे ठुकरा दिया। कोणिक ने तीसरी बार दूत भेजकर युद्ध की चुनौती दी। चेटक ने उसे स्वीकार कर लिया।

चेटक ने मल्ल और लिच्छवि-अठारह गणराजों को आमंत्रित कर सारी स्थिति बताई। उन्होंने भी चेटक के निर्णय का समर्थन किया। उन्होंने कहा- 'शरणागत वेहल्लकुमार को कोणिक के हाथों में नहीं सौंपा जा सकता। हम युद्ध नहीं चाहते किन्तु कोणिक ने यदि हम पर आक्रमण किया तो हम अपनी पूरी शक्ति से गणतंत्र की रक्षा करेंगे।'

कोणिक की सेना वैशाली गणतंत्र की सीमा पर पहुंच गई घमासान युद्ध चालू हो गया। चेटक ने दस दिनों में कोणिक के दस भाई मार डाले। कोणिक भयभीत हो उठा।

## इस घटना ने निम्न तथ्य स्पष्ट कर दिए-

- अहिंसा कायरता के आवरण में पलने वाला क्लैव्य नहीं है। वह प्राण-विसर्जन की तैयारी में सतत जागरूक पौरुष है।
- भगवान् महावीर से अनाक्रमण का संकल्प लेने वाले अहिंसाव्रती आक्रमण की क्षमता से शून्य नहीं थे, किन्तु वे अपनी शक्ति का मानवीय हितों के विरुद्ध प्रयोग नहीं करते थे।
- मानवीय हितों के विरुद्ध अभियान करने वाले जब युद्ध की अनिवार्यता ला देते हैं तब वे अपने दायित्व का पालन करने में पीछे नहीं रहते।

यह आश्चर्य की बात है कि इस महायुद्ध में भगवान् महावीर ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया। दोनों भगवान् के उपासक और अनुगामी थे। वे भगवान् की वाणी पर श्रद्धा करते थे। पर प्रश्न इतना उलझ गया था, कि उन्होंने उसे आवेश की भूमिका पर ही सुलझाना चाहा, भगवान् का सहयोग नहीं चाहा। और एक भयंकर घटना घटित हो गई।

ऐसी ही एक घटना कौशांबी के आस-पास घटित हो रही थी। महारानी मृगावती ने उसमें भगवान् का सहयोग चाहा। भगवान् वहां पहुंचे। समस्या सुलझ गई।

उज्जयिनी का राजा चण्डप्रद्योत बहुत शक्तिशाली था। वह उस युग का प्रसिद्ध कामुक था। महारानी मृगावती का चित्र-फलक देख वह मुग्ध हो गया। उसने दूत भेजकर शतानीक से मृगावती की मांग की। शतानीक ने कड़ी भर्त्सना के साथ उसे ठुकरा दिया। चण्डप्रद्योत क्रुद्ध होकर वत्स देश की ओर चल पड़ा। शतानीक घबरा गया। उसके हृदय पर आघात लगा। उसे अतिसार की बीमारी हो गई और वह इस संसार से चल बसा।

महारानी ने कौशांबी की सुरक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ कर ली।

वत्स की जनता अपने देश और महारानी की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध हो गई। चण्डप्रद्योत की विशाल सेना ने नगरी को घेर लिया। चारों ओर युद्ध का आतंक छा गया। मृगावती को भगवान् महावीर की स्मृति हुई। उसे अंधकार में प्रकाश की रेखा का अनुभव हुआ। समस्या का समाधान दिखने लगा। भगवान् महावीर कौशांबी के उद्यान में आ गए। भगवान् के आगमन का संवाद पाकर मृगावती ने कौशांबी के द्वार खुलवा दिए। भय का वातावरण अभय में बदल गया। रणभूमि जनभूमि हो गई। जन-जन पुलकित हो उठा।

मृगावती महावीर के समवसरण में आई। चण्डप्रद्योत भी आया। भगवान् ने न किसी की प्रशंसा की और न किसी के प्रति आक्रोश प्रकट किया। वे मानवीय दुर्बलताओं से भलीभांति परिचित थे। उन्होंने मध्यस्थभाव से अहिंसा की चर्चा की। उससे सबके मन में निर्मलता की धार बहने लगी। चण्डप्रद्योत का आक्रोश शांत हो गया।

(क्रमशः)



## धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है  
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार :  
गुरुदेव श्री तुलसी



फतेहपुर-निवासी दानवीर श्री सोहनलालजी दूगड़ जो कि आचार्य प्रवर के विरोध में भाग लिया करते थे, बाबू जयप्रकाश नारायण के पास गये और आचार्यवर के बारे में आक्षेपात्मक आलोचना करते हुए बोले- 'आचार्य तुलसी लड़कियों को अपने साथ रखते हैं। बाबूजी बोले- 'इसमें क्या खास बात है? गांधीजी भी अपने साथ लड़कियों को रखते थे। वे लड़कियों का सहारा लेकर चलते थे। पहुंचे हुए व्यक्ति के लिए लड़की और लड़के में कोई फर्क नहीं होता।'

### प्रतिक्रिया

चाखेड़-६-६-८५

परमाराध्य आचार्य प्रवर ने अपने मुनि जीवन का एक संस्मरण सुनाते हुए कहा- 'पूज्य गुरुदेव कालूगणी की मेरे पर अत्यन्त कृपा थी। दिन-प्रतिदिन उनकी कृपा बढ़ती ही गई। जितना मैं था उससे भी अधिक वे मेरा अंकन करते थे। वि. सं. १९९२ के उदयपुर चतुर्मास की बात है- गुरुदेव ने मेरे पर समुच्चय के कार्य लागू कर दिये। गुरुदेव का यह अप्रत्याशित निर्णय न केवल साधु-साध्वी-समाज में अपितु श्रावक- समाज में भी चर्चा का विषय बन गया। साधु-साध्वियों एवं श्रावकों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई।'

इस प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर मैं गुरुदेव के चरणों में उपस्थित हुआ और बद्धांजलि होकर बोला- गुरुदेव! आपने मेरे पर समुच्चय के कार्य लागू किये हैं, इसे लेकर साधु-साध्वियों एवं श्रावकों में तीव्र प्रतिक्रिया हो रही है।

गुरुदेव मुस्कराए और वात्सल्य विकीर्ण करते हुए मेरे कान को पकड़ा। बस इतने से मुझे समाधान मिल गया। मैंने जान लिया कि गुरुदेव की कृपादृष्टि में कोई अन्तर नहीं है। फिर मैंने परवाह नहीं की कि लोगों में क्या प्रतिक्रिया हो रही है।

### ज्ञान की गहनता

चाखेड़-६-६-८४

आचार्यवर ने साधु-साध्वियों से पूछा-मुनि को खुले मुंह न बोलना-क्या इसका कोई आगमिक आधार है? साधु-साध्वियों के पास इसका कोई सन्तोषजनक समाधान नहीं था।

अन्त में आचार्यवर ने अपने जीवन का एक संस्मरण सुनाते हुए कहा-वि. सं १९९४ का हमारा चतुर्मास बीकानेर में था। वहां अगरचन्दजी नाहटा आदि कुछ व्यक्ति मेरे पास आए और बोले- क्या आपके पास खुले मुंह न बोलने का कोई आगमिक आधार है? मैंने कहा-खुले मुंह न बोलने का आधार भगवती सूत्र के सोलहवें शतक का दूसरा उद्देशक है, जिसमें कहा गया है कि इन्द्र का खुले मुंह बोलना सावद्य है।

### सूर्योदय का आभास

चाखेड़-६-६-८५

परमाराध्य आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ विराजमान थे। कुछ साधु-साध्वियां, समणियां श्रीचरणों की उपासना में बैठी हुई थी। आचार्यवर एवं युवाचार्यश्री अतीत का साक्षात्कार कर रहे थे। उसी सिलसिले में श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने फरमाया 'आचार्यवर जब मुनि अवस्था में थे, तभी साधु-साध्वियों में यह धारणा बन चुकी थी कि मुनि तुलसीरामजी ही भावी आचार्य हैं।

मुझे याद है-जब मैं वैरागी था, कालूगणी के दर्शन करने गंगाशहर गया। उस समय टमकोर में मुनि छबीलजी स्वामी विराज रहे थे। उन्होंने मुझे कहा - देख! तुम गुरुदेव के दर्शन करने जा रहे हो, एक बात का ध्यान रखना, वहां मुनि तुलसीरामजी हैं, उनके दर्शन अवश्य करना। वे कालूगणी के बाद आचार्य बनने वाले हैं।'

आचार्यवर तुलसी उस समय एक सामान्य मुनि थे। फिर भी तत्कालीन लब्धप्रतिष्ठ संत आपको बहुत ही आदर व सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

### गंवार की पहचान

सांकड़ा-२१-६-१९८५

परमाराध्य आचार्य प्रवर विराजमान थे। कुछ साध्वियां गुरुदेव की उपासना में बैठी हुई थीं। एक ग्रामीण भाई आया और उसने साध्वियों को चीर कर आगे बढ़ने की कोशिश की। आचार्यवर ने उसे आगे बढ़ने से रोका। ग्रामीण लौट गया। आचार्यवर ने इस घटना पर टिप्पणी करते हुए कहा- इन लक्षणों से व्यक्ति गंवार कहलाता है। आगे जाने के लिए रास्ता नहीं था, फिर भी इस व्यक्ति ने आगे बढ़ने का प्रयास किया। (क्रमशः)

## संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें

<https://abtyp.org/prakashan>



समाचार प्रकाशन हेतु

[abtypitt@gmail.com](mailto:abtypitt@gmail.com) पर ई-मेल

अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री सुगमचंदजी (भादरा) दीक्षा क्रमांक 445

मुनिश्री परम विनयी, वैरागी, पापभीरु और धृति-सम्पन्न थे। कर्म निर्जरा के प्रति आपकी दृष्टि लगी रहती थी। आपने निम्नोक्त तपस्या की- उपवास/1039, 2/28, 3/7, 4/2, 5/6, 7/2, 21/1, 32/1 अन्त में 18 दिन के चौविहार तप का प्रत्याख्यान किया। उन्नीसवें दिन पानी पिया फिर तीन आहार का प्रत्याख्यान कर दिया। 21 दिन के संलेखना (18 दिन चौविहार, 3 दिन तिविहार) तप में दिवंगत हो गये।

- साभार : शासन समुद्र -

## संक्षिप्त खबर

## 25 बोल पर आधारित 'भाग मिल्खा भाग' प्रतियोगिता का आयोजन

**यशवंतपुर।** आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सोमयशा जी ठाणा-3 के सान्निध्य में यशवंतपुर महिला मंडल द्वारा 25 बोल पर आधारित 'भाग मिल्खा भाग' नामक एक ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अवसर पर साध्वी सोमयशा जी ने श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि '25 बोल' थोकड़ा का सबसे छोटा हिस्सा है, परंतु उसका अर्थ अत्यंत गहरा है। उन्होंने 'जीव अजीव' पुस्तक का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी तथा बताया कि तत्त्वज्ञान से हमारा वैराग्य पुष्ट होता है और आत्मा पापभीरू (निर्भय) बनती है। इस प्रतियोगिता में भानुप्रिया जी दूगड़ की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने अत्यंत रोचक और शिक्षाप्रद गेम्स के माध्यम से कार्यक्रम का संचालन किया, जिसमें सभी भाई-बहनों ने बड़े उत्साह से भाग लिया यह कार्यक्रम मनोरंजन और शिक्षाप्रद रहा सबने उत्साहपूर्वक खेल-खेल में 25 बोल सीखा। कार्यक्रम में स्वागत अध्यक्ष रेखा पितलिया ने किया परिचय हेमा जी पोरवाल द्वारा रहा तथा आभार मंत्री टीना जी पिपलिया द्वारा किया गया। सभा, परिषद और महिला मंडल द्वारा भानुप्रियाजी दूगड़ का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सभी की उपस्थिति रही और वातावरण आध्यात्मिकता व उमंग से भर गया।

## ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का आयोजन

**दिल्ली।** अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी में संचारित और अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आयोजित ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का आयोजन अणुव्रत संस्कार केंद्र गंगा विहार में किया गया जिसमें अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा का निर्देश और शुभकामना संदेश शामिल रहा जिसमें अणुव्रत संस्कार केंद्र के बच्चों के साथ उनके अभिभावक भी उपस्थित रहे सभी को स्वदेशी मोमबत्ती देकर प्रदूषण मुक्त त्यौहार मनाने, पटाखे न जलाने और दीप जलाकर आपसी सौहार्द के साथ मनाने की शपथ अणुव्रत समिति ट्रस्ट के मंत्री मोहित कुमार शर्मा द्वारा दिलाई गई दीपावली प्रकृति के साथ, सादगी के साथ मनाए। प्रदूषण मुक्त उत्सव मनाने, पर्यावरण की रक्षा करने और खुशियाँ बाँटने और अणुव्रत जीवन शैली ईको फ्रेंडली फेस्टिवल में अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसमें अणुव्रत संस्कार केंद्र की शिक्षिका और प्रभारी अंशिका जैन, स्वेक्षा के साथ स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष सीमा कश्यप, सदस्य मधु शर्मा, खुशबु, पूनम शर्मा, मोनिका शर्मा, ललिता, अनुष्का, माही और अन्य सदस्य शामिल रहे।

## कौन बनेगा भिक्षु भक्त प्रतियोगिता का आयोजन

**सिद्धार्थनगर, मैसूर।** साध्वी सिद्धप्रभाजी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में कन्या मंडल मैसूर द्वारा एक रोचक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांयकालीन अर्हंत वंदना के पश्चात बुरड भवन में 'कौन बनेगा भिक्षु भक्त' प्रतियोगिता का रोचक आयोजन कन्यामंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को दो-दो के जोड़े पिता-पुत्री, पति-पत्नी, सहेलियों का, अध्यक्ष मंत्री, देवर-भाभी, मित्रों का गुप बनाकर यह प्रतियोगिता करवाई गई। सभी प्रतियोगियों को साथ-साथ प्रश्न पूछे गए जिसमें तीन लाइफ लाइन दी गई सभी ने बड़े उत्साह से भाग लिया प्रतियोगिता के निर्णायक की भूमिका में 'सहेलियों का जोड़ा' को रैपिड एक्शन राउंड के माध्यम से 'सहेलियों का जोड़ा' विजेता घोषित हुआ। यह पूरी प्रतियोगिता कौन बनेगा करोड़पति के तर्ज पर की गई। कन्या मंडल संयोजिका दिशा कटारिया सहसंयोजिका सेजल बुरड मानसी दक मुस्कान नौलखा, मोना भटेवरा की अहम भूमिका रही। भीम (राज) के सभा अध्यक्ष गोकुल मुणोत की उपस्थिति रही। यह पूरा कार्यक्रम आचार्य भिक्षु जीवन पर था। सभी ने इस कार्यक्रम की सराहना की और ऐसे ज्ञानवर्धक कार्यक्रम बार बार करने को कहा।

## श्रावक सम्मेलन का सफल आयोजन

**बरवाला, हरियाणा।**

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्याएं डा. समणी ज्योतिप्रज्ञा जी, डा. समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में श्रावक सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। शासन सेवी ओम प्रकाश जिन्दल की पुण्य स्मृति में निर्मित आचार्य महाश्रमण सभागार का लोकार्पण समारोह हरियाणा प्रांतीय सभा के तत्वाधान में पूर्ण हुआ। इस कार्यक्रम में श्रद्धा की प्रतिमूर्ति सावित्री जिन्दल विधायक हिसार, कैबिनेट मंत्री रणवीर गंगवा के सुपुत्र युवा नेता भाई संजीव गंगवा, सुरेश गोयल के प्रतिनिधि अशोक भाई, मखनलाल गोयल अध्यक्ष प्रांतीय सभा, सुरेन्द्र जैन एडवोकेट, घासीराम जैन, कुलवन्त जैन, विनोद बंसल, सुंदर गोयल, रणधीर सिंह पूनिया धीरू भाई, मुकेश मित्तल, पुष्पा

मौर्य, सुमन नौलखा, रमेश बैटरी वाला चेरमैन नगरपरिषद, सतीश गर्ग, संजय डालमिया, जगमोहन मित्तल, मनीष गोयल, सुरेश गोयल, बजरंग जैन, महान सिंगला, दयानन्द जैन आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों सहित, हिसार, हांसी, आदमपुर, बालसमन्द, टोहाना, तोशाम आदि 18 क्षेत्रों से लगभग 500 लोग उपस्थित थे। उसके बाद समणी वृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। प्रमोद कुमार जैन ने स्वागत भाषण में बरवाला तेरापंथ भवन निर्माण की तथा आचार्य महाश्रमण सभागार के लोकार्पण की विस्तृत जानकारी दी। अनुदानदाताओं के प्रति आभार ज्ञापित किया। प्रांतीय सभा के महामंत्री अमित जैन ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। अणुव्रत महासमिति के पूर्वाध्यक्ष सुरेन्द्र जैन एडवोकेट ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। कन्यामण्डल,

महिलामण्डल, ने सुमधुर मंगलाचरण व गीत का संगान किया। वेदांशी व चिपांशु दोनों बच्चों ने स्वागत प्रस्तुति की। डा. समणी मानस प्रज्ञाजी ने संघ निष्ठा हेतु श्रोताओं को प्रेरित किया। सावित्री जिंदल ने कहा आज मैं इस आयोजन को देखकर बहुत खुश हूँ। आचार्य प्रवर के शुभागमन के अवसर पर मैं अपना भरपूर सहयोग देने का प्रयास करूंगी। युवानेता भाई संजीव गंगवा ने जैन धर्म व तेरापंथ शासन की प्रशंसा करते हुए कहा मैं जन्म से जैन नहीं पर हम जैन धर्म का पालन करते हैं। डा. समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा- हरियाणा शक्ति व भक्ति का संगम है। भगवान भक्ति के भूखे होते हैं। यह तेरापंथ का श्रावक सम्मेलन है। कार्यक्रम का कुशल संचालन अमित जैन व श्रीमान प्रमोद कुमार जैन ने किया।

## यू टर्न कार्यशाला का हुआ आयोजन

**सिद्धार्थनगर, मैसूर।**

साध्वी सिद्धप्रभाजी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में तेयुप, अणुव्रत समिति मैसूर द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी सिद्धप्रभा जी के नवकार मंत्र पश्चात सरगम टीम द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया।

तेयुप अध्यक्ष प्रमोद मुणोत ने सभी का स्वागत किया। साध्वीश्री ने अपने व्यक्तय में फरमाते हुए कहा जिस युवा का मेरुदंड स्वस्थ सीधा रहता है जिसका सादा जीवन है उसके विचार उच्च होते हैं उस युवा का स्वास्थ्य और उसके गांव,

उसके देश का विकास कोई नहीं रोक सकता है। युवा व्यक्ति को सही समय व शक्ति का नियोजन पूरे जोश व होश में करना चाहिए।

युवा के पास बुद्धि का भंडार है युवा व्यक्ति को स्वयं के प्रति जागरूक रहना चाहिए माता-पिता का दायित्व है बच्चों में धर्म के अच्छे संस्कार देना। धर्म, समाज के प्रति अपने दायित्व को निर्वहन करना एक अच्छे युवक का कर्तव्य होता है। साध्वी मलययसा जी ने युवकों के कर्तव्य पर व्यक्तत्व प्रस्तुत किया। साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने कहा आज का युवा सोशल मीडिया, इंस्टाग्राम, फेसबुक

और अपने ऑफिस, दुकान के कामकाज में अधिक व्यस्त हैं इसी में ज्यादा वक्त देता है उसको स्वयं के बारे में जानने सोचने का भी समय नहीं है अब समय आ गया है आज के युवा को यू टर्न लेने का स्वास्थ्य, हेल्थ, हैप्पीनेस, पीसफुल माइंड, फैमिली की तरफ यू टर्न लेना जरूरी है। तब ही आदमी विकास की तरफ बढ़ सकता है।

साध्वी आस्थाप्रज्ञा जी ने दैनिक जीवन में करने योग्य प्रेक्षाध्यान, योग-साधना के प्रयोग बताए। कार्यक्रम का संचालन तेयूप मंत्री जितेंद्र चोपड़ा ने किया। आभार मुस्कान नौलखा ने किया।

## तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का सफल आयोजन

**मैसूर।**

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सिद्धप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में व उपासक श्रेणी राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा के निर्देशन में मैसूर भवन में 'तेरापंथ - मेरापंथ' कार्यशाला का सफल आयोजन हुआ। लगभग 7 घंटे तक चलने वाली इस कार्यशाला में प्रवेश से अंत तक बच्चे, कन्या, किशोर, युवक युवतियों वृद्ध सहित नजनगुड, बैंगलोर विजयनगर, मैसूर क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा आचार्य भिक्षु व तेरापंथ के सिद्धान्तों

की गहरी समझ प्राप्त कर उपासक द्वारा अनेक प्रश्नों का समाधान प्राप्त कर आत्मोनत्व का अनुभव किया। यह कार्यशाला की उपयोगिता व सफलता का प्रतीक था। साध्वीश्री द्वारा महामंत्रोच्चार के शुभारंभ पश्चात् साध्वीवृद्ध ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। उपासक राजेश आच्छा, राष्ट्रीय उपासक श्रेणी के संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा का परिचय प्रस्तुत किया। सभा अध्यक्ष प्रकाश दक (रायल) ने स्वागत वक्तव्य किया। उपासक अशोक बुरड ने संचालन करते हुए मुख्य प्रवक्ता सूर्यप्रकाश जी को आमंत्रित किया। सूर्यप्रकाशजी ने दो चरणों में चार सत्रों द्वारा कई तेरापंथ के

मुख्य सिद्धान्तों को बहुत ही सरलता और सटीकता से लोगों को समझाया। तेरापंथ की यात्रा से प्रारम्भ कर दान-दया, आज्ञा-अनाज्ञा, धर्म-अधर्म, लौकिक-लोकोतर धर्म, साध्य-साधन व साधना-शुद्धि आदि अनेक सुक्ष्म विषयों पर अनेक उदाहरणों, और तर्क और प्रमाण के साथ समझाया तथा तेरापंथ की परम्पराओं के बारे में अवगत कराया। प्रत्येक चरण में अनेकानेक जिज्ञासाओं का सटीक समाधान प्राप्त कर श्रोता संतुष्ट हो रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम की शक्ति और प्रेरणा का श्रेय आचार्यप्रवर को दिया और उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। आभार सभा मंत्री दिलीप पितलिया ने किया।





## अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

### समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए  
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



## अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

### मंगल भावना समारोह कार्यक्रम का आयोजन

मैसूर।

साध्वी सिद्धप्रभाजी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में आज तेरापंथ भवन - मैसूर के श्रावक-श्राविकाओं द्वारा साध्वीश्री के प्रति वर्तमान चातुर्मास प्रवास व गुरुदेव इंगित तमिलनाडु की ओर आगामी विहार व स्वास्थ्य के प्रति मंगल भावना प्रेषित की।

सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने और श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी-अपनी मंगल भावना प्रेषित की। चातुर्मास के दौरान सभी साध्वियों द्वारा जो श्रम किया गया, जो प्रेरणा मिली, जो आपने श्रावको के आध्यात्मिक जीवन विकास एवं कल्याण हेतु कार्यक्रम किए, उसके लिए सभी श्रावको ने कृतज्ञता ज्ञापित की। सभी

संस्था के कार्यकर्ताओं ने मिलकर पूरे समाज की तरफ से कृतज्ञता स्वरूप एक भक्तिमय गीत का संधान किया, जिसकी रचना विमलजी पितलिया ने की। साध्वीश्री ने सभी श्रावको की भावना से आत्म विभोर से भावात्मिक हुए, और मैसूर को हर साल चातुर्मास मिले ऐसी गुरुदेव समक्ष अर्ज करेंगे, ऐसी भावना प्रेषित की। सभी श्रावकों ने साध्वीश्री से मैसूर बिराजने की अर्ज की ताकि आसपास के क्षेत्रों को ज्यादा लाभ मिले, उस उद्देश्य से साध्वीश्री ने मैसूर शहर से विहार करने के भाव रखे। सभा मंत्री दिलीप पितलिया ने सूचना देते हुए कहा कल साध्वीश्री राजा परदेसी का प्रवचन रहेगा और 7:15 बजे तेरापंथ भवन से विहार कर कोठारी परिवार शिवरामपेट पधारेंगे।

## मंगल भावना समारोह का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर के तत्त्वाधान में आचार्य श्री महाश्रमण जी की शिष्या साध्वी संयमलता जी ठाणा-4 के अनुपम अविस्मरणीय ऐतिहासिक चातुर्मास की परिसंपन्नता पर मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी संयमलता जी ने फरमाया यह विदाई की बेला नहीं बधाई की बेला है। उल्लास और विषाद का समन्वय है। 4 महीने श्रावकों ने जो आध्यात्मिकता की गंगा में डुबकी लगाई वह उल्लास और अब यह पाथेय रुपी गंगा की धारा आगे बढ़ जाएगी जो विषाद है। किंतु इसे विषाद न मानकर साधु-साध्वियों के बताए मार्ग को अपनाना सुखी जीवन का आह्वान होता है हमारे जीवन में अनेक खुशियों के क्षण आते हैं परिवार वाले बधाई देते हैं। संघ में दीक्षा होती है तो साधु संतों को बधाई दी जाती है।

आज भी इस चातुर्मास को आध्यात्मिक, धार्मिक, व्यावहारिक रूप से सफल बनाने में सभी तरह से योगभूत बनने वालों को बधाई देती हूँ। आगे भी इसी तरह एक नेक बनकर संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठावान बनी रहे। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने कहा चातुर्मास भक्तियोग, ज्ञानयोग और कर्मयोग की पावन त्रिवेणी है।

साध्वी रौनकप्रभा जी ने श्रावक समाज से खमत-खमणा करते हुए संयम और आध्यात्मिकता के साथ धर्म की लौ जलाए रखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया, तत्पश्चात सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर युवक परिषद अध्यक्ष विकास बांठिया, महिला मंडल अध्यक्ष महिमा पटावरी, टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिममत मांडोट, अणुव्रत समिति अध्यक्ष महेंद्र जी टेबा, प्रेक्षा फाउंडेशन से श्रीमती वीणा बैद, सभा ट्रस्ट से पुखराज श्री

श्रीमाल, युवक परिषद निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा, महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्ष मंजू गादिया, हनुमंतनगर महिला मंडल अध्यक्ष संगीता तातेड, राजाजी नगर सभा मंत्री चंद्रेश मांडोट, तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र से प्रेम चावत, अहम मित्र मंडल अध्यक्ष सुशील चौरडिया, युवक परिषद प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोरकरणा एवं अनेक श्रावक श्राविकाओं ने साध्वीश्री के प्रति अपनी मंगल भावनाएं व्यक्त की। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी गई। उपासक छत्रसिंह मालू ने स्वरचित गीतिका के द्वारा अपने उद्गार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के उपाध्यक्ष भंवरलाल मांडोट ने किया। कार्यक्रम में सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल बोथरा, कोषाध्यक्ष अशोक बाबेल, संगठन मंत्री मनोहर बोहरा, सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकारिणी एवं श्रावक - श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

## 85 घंटे का भक्तामर अनुष्ठान आयोजित

यूरई।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्याएँ डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा जी और समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी के सान्निध्य में तथा अजमान सभा के तत्त्वाधान में भक्तामर स्तोत्र का (लगभग 85 घंटे का) सुंदर और सफलतम आयोजन संपन्न हुआ। इस पावन अनुष्ठान में UAE, UK, भारत (कोलकाता) तथा अमेरिका से श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धा, निष्ठा और परिश्रम से भाग लिया। भारत के कोलकाता

से उपासक डॉ. प्रेमलता चोरडिया ने अपनी आध्यात्मिक उपस्थिति से आयोजन को विशेष रूप से आलोकित किया। UK से स्मिता गुंजन, निशा खान्देरिया, सुनीता पोरवाल, हसु भाई, जीत भाई, सुनील भाई आदि ने भी अपनी सक्रिय भागीदारी से अनुष्ठान को सफल बनाया। अमेरिका से सभी सन्माननीय समणियों — समणी चैतन्य प्रज्ञा जी, समणी हिम प्रज्ञा जी, समणी समत्व प्रज्ञा जी, समणी अभय प्रज्ञा जी, समणी आर्जव प्रज्ञा जी, समणी स्वाति प्रज्ञा जी का सान्निध्य एवं सहयोग

अनुष्ठान को प्राप्त हुआ। इस अनुष्ठान को सफलतम बनाने में डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा जी और समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी का श्रम विशेष रूप से सराहनीय रहा। UAE से उपासक दिनेश कोठारी, पुष्पा कोठारी, राकेश पटावरी तथा दीप्ति पटावरी ने इस अनुष्ठान के आयोजन में विशेष सहयोग प्रदान किया। जैन संघ के अध्यक्ष विपुल कोठारी के आमंत्रण पर दुबई सकल जैन संघ के सामने समणी जी का आशीर्वाचन और मंगल पाठ हुआ। उसमें लगभग 500 लोगों ने लाभ लिया।

## लोगस्स कल्प अनुष्ठान का आयोजन

होस्कोटे।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की शिष्या साध्वी सोमयशाजी ठाणा-3 के सान्निध्य में लोगस्स कल्प अनुष्ठान हुआ, साध्वीश्री ने कहा की लोगस्स को कलयुग का कल्पवृक्ष कहा जाता है।

यह स्तुति ग्रंथ शक्तिशाली मंत्रों का संग्रह है, इसकी आराधना से आरोग्य, अंतरदृष्टि और समस्याओं का समाधान मिलता है, चन्द्रमा, सूर्य और सागर के प्रतीक प्रभु का ध्यान करने से निर्मलता, तेजस्विता और गंभीरता का विकास होता है अनुष्ठान विविध मुद्राओं के साथ करवाया गया। इस अनुष्ठान से अनेक

लाभ होता है। जैसे मन की प्रसन्नता, चित्त की निर्मलता, भावों की पवित्रता होती है, सकारात्मक सोच का विकास होता है।

साध्वीश्री ने 'चंदेसु निम्लयर' और 'आरोग्यबोहिलाभं' का बहुत ही सुन्दर तरीके से विवेचन किया। प्रायः सभी भाई-बहनों ने 5 लोगस्स 5 दिशाओं में करने का संकल्प लिया। रात्रि में त्याग करने का संकल्प किया।

100वाँ गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का दीक्षा दिवस पर तुलसी अष्टकम्, मौन, सामायिक, उपवास आदि की प्रेरणा दी, अनेकों को संकल्प करवाया। साध्वीश्री का अल्पकालीन प्रवास संघप्रभावक रहा अनेक लोगों ने भिक्षु चेतना वर्ष के

उपलक्ष में त्याग प्रत्याख्यान किए। इसी प्रवास में ज्ञानशाला के बच्चों ने साध्वीश्री की उपासना कर अपने आपको संस्कारी बनाने का संकल्प लिया। आस-पास के क्षेत्रों के अनेक श्रावकों ने दर्शन कर अपने क्षेत्र में पधारने की विनती की, वेल्लुर, केजीएफ के श्रावको ने अपनी उपस्थिति दर्ज की, यशवंतपुर के बरडिया परिवार के मदनलाल बरडिया का स्वर्गवास हो गया। शौक संपन्न कर होस्कोटे में साध्वीश्री के दर्शन कर संबल प्राप्त किया साध्वी सरलयशाजी, साध्वी ऋषिप्रथा जी ने अपने विचार रखे। बरडिया परिवार की बहिनों ने गीत की प्रस्तुति दी, हर्षिल बरडिया ने भी प्रस्तुति दी।

## ‘Science of Inner Balance’ कार्यक्रम का आयोजन

### गुडियाथम।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सृष्टिपुत्र मुनि रश्मि कुमार जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन गुडियाथम में 'Science of Inner Balance' का एकदिवसीय आध्यात्मिक प्रशिक्षण शिविर तेरापंथ महिला मंडल, गुडियाथम के तत्वावधान आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग 70 साधकों ने भाग लेकर ध्यान, प्रेक्षा साधना एवं आत्मिक जागरूकता के माध्यम से मन की स्थिरता और आंतरिक संतुलन की अनुभूति प्राप्त की। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात प्रशिक्षकों ने क्रमवार सत्रों के माध्यम से तन, मन और आत्मा के सामंजस्य पर गहन अभ्यास कराया। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें तमिल साधकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे यह आयोजन संस्कृति और साधना का सुंदर संगम बन गया। मुख्य प्रशिक्षकों — श्रीमती भारती मूथा, श्रीमती साधना परमार, श्रीमती श्वेता

पिपाडा, Laughter Therapist श्री मुकेश गिरिया द्वारा साधकों को आत्म-संतुलन, श्वास-साधना, योग एवं ध्यान के वैज्ञानिक पहलुओं का अभ्यास कराया गया। मुनि श्री रश्मि कुमार जी ने कहा कि — वर्तमान समय में बाहरी उपलब्धियों की दौड़ में मनुष्य स्वयं से दूर होता जा रहा है। वास्तविक सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि अपने आंतरिक संतुलन और आत्म-जागरूकता में निहित है। जब मन शांत होता है, तभी जीवन में सच्ची प्रसन्नता आती है। उन्होंने आगे कहा कि 'Science of Inner Balance' के माध्यम से हम अपने भीतर छिपी सकारात्मक शक्ति को पहचान सकते हैं। यह साधना केवल ध्यान नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है जो हमें संयम, समता और संतुलन के मार्ग पर अग्रसर करती है।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने भी साधकों को आत्म-जागरूकता की दिशा में निरंतर अभ्यास करने का संदेश दिया और कहा कि 'प्रेक्षा साधना हमें भीतर की शुद्धता और बाहर की समरसता दोनों प्रदान करता है।'

## संक्षिप्त खबर

### कन्या मंडल को किया गया सम्मानित

मदुरै। कोबा में आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में आयोजित अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के 21वें राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन में, तेरापंथ कन्या मंडल मदुरै को सत्र 2023-2025 में 'शक्ति उपक्रम' के अंतर्गत श्रेष्ठ कार्य हेतु सम्मानित किया गया।

इस उपलक्ष्य में मदुरै तेरापंथ भवन में मुनिश्री हिमांशु कुमारजी के पावन सान्निध्य में एक विशेष आयोजन रखा गया, जहाँ कन्या मंडल को प्राप्त इस सम्मान को स्थानीय पदाधिकारियों द्वारा सौंपकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी ने 'ॐ अर्हम' के उद्घोष के साथ कन्याओं का हौसला बढ़ाया और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं। उक्त जानकारी कन्या मंडल संयोजिका श्रीमती लता कोठारी एवं सभा निवृत्तमान अध्यक्ष अशोक जीरावला ने दी।

## स्वागत एवं अभिनन्दन समारोह

अणुव्रत भवन, नई दिल्ली। आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिक्षा समणी डॉ. मंजुप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञाजी के अणुव्रत भवन, दिल्ली प्रवास में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप दूगड़ ने दर्शन किये। दूगड़ एक उत्साही व सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

अणुव्रत भवन पधारने पर दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुविभा के पूर्व मंत्री भीखमचंद सुराणा एवं सहमंत्री सुरेन्द्र नाहटा ने हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया जिनकी संघभक्त एवं एक विनम्रतापूर्ण छवि रही है। उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति समणीवृंद ने आगामी कार्यकाल हेतु हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त की।

## प्रबुद्ध सेमिनार का भव्य आयोजन

### पूर्वांचल कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिक्षा मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम कोलकाता-हावड़ा एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकत्ता - पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा प्रबुद्ध सेमिनार का भव्य आयोजन भिक्षु विहार में किया गया। जिसका विषय जैन दर्शन जीवनशैली एवं स्वास्थ्य। कार्यक्रम के मुख्यवक्ता थे डॉ गौतम पीपाड़ा।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - भारतीय दर्शनों में एक प्रमुख दर्शन है- जैन दर्शन। जैन दर्शन के मुख्य आधार स्तंभ हैं- आत्मकतृत्ववाद, कर्मवाद, पुरुषार्थवाद अनेकांतवाद। अहिंसा उसका दर्शन भी है और जीवन शैली भी। दर्शन जब तक ग्रंथ तक सीमित रहता है तब तक व्यवहार के धरातल पर उसका उपयोग नहीं हो पाता है। जब दर्शन ग्रंथों से निकलकर लोगों के आचरण में उतरता है, तभी वह दर्शन जन-जन के लिए कल्याणकारी व उपयोगी बन पाता है। जैन दर्शन भी अहिंसा के माध्यम से

जीवन-शैली का अंग बनकर जन-जन के लिए उपयोगी बना हुआ है, बन सकता है। आचार्य तुलसी ने जिसे जैन जीवन शैली के नाम से अभिहित किया है। जैन जीवन शैली के नौ सूत्र- सम्यकदर्शन, अनेकांत, अहिंसा, समन संस्कृति, इच्छा परिमाण, सम्यक आजीविका, सम्यक संस्कार, आहारशुद्धि-व्यसनमुक्ति, सधार्मिक वालसत्य है। इन् को सूत्रों की आराधना व अच्छे आचरण से व्यक्ति अपने जीवन को अच्छा बना सकता है। मुनि जिनेश कुमार ने आगे कहा - तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम सभी प्रबुद्धजनों में एक नई चेतना का संचार करने वाला हो सकता है। श्रावक गुलाब चंदजी दुगड़ ने अटार्क तप कर अपने दृढ़ मनोबल का परिचय दिया है, मंगलकामना। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ टीपीएफ के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण टीपीएफ पूर्वांचल के अध्यक्ष राकेश सिंधी ने दिया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉक्टर गौतम पीपाड़ा ने स्वास्थ्य के संदर्भ में बहुत सारी जानकारी प्रदान करते हुए सभी को जागरूक रहने

का आहवान किया। टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रकाश जी मालू टीपीएफ की गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हुए -नई पीढ़ी को टीपीएफ से जुड़ने का आहवान किया। इस अवसर पर डा. प्रताप संचेती ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अतिथि परिचय टीपीएफ साउथ हावड़ा के अध्यक्ष राजेश जैन ने दिया। आभार टीपीएफ कोलकाता जनरल के अध्यक्ष प्रतीक दुगड़ ने व्यक्त किया। अतिथियों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित नवीन बैंगानी का पूर्वांचल सभा द्वारा सम्मान किया गया। जैन विश्वभारती के सहमंत्री नवीन बैंगानी व व पूर्वांचल सभा के कोषाध्यक्ष जयसिंह दुगड़ ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया। इस अवसर बाली बेलूर सभा के मंत्री गुलाब जी दुगड़ ने अटार्क तप का प्रत्याख्यान किया। इसी अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में टीपीएफ एवं पूर्वांचल सभा के कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित रहे।

## मंगल भावना समारोह का आयोजन

### किरणकुंज शास्त्रीनगर।

शास्त्री नगर तेरापंथ भवन में समायोजित मंगल भावना समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा मैं आचार्य प्रवर के निर्देशानुसार दो महीना का चातुर्मास परिसंपन्न करके दो महीने का शास्त्री नगर में करने की लिए आई। स्थानीय श्रावक श्राविकाओं ने इस समय का मूल्यांकन करते हुए पूरा-पूरा लाभ उठाया। प्रातः प्रवचन का क्रम एवं शात्रि

में पच्चीस बोल का अर्थ बताया गया जिससे अनेकानेक भाई बहिन लाभान्वित हुए। यहाँ की सभी संस्थाएँ साक्रिय हैं पदाधिकारी समय समय पर अपनी संस्था के द्वारा कार्यक्रम आयोजित करते हैं। ज्ञानशाला का क्रम बहुत ही व्यवस्थित चलता हैं। अन्त में यही कहना चाहती हूँ कि आप ने जो कुछ पाया है उसको सुरक्षित रखे। भाविष्य में पधारने वाले साधु-साधवियों की सेवा कर अपनी ज्ञान संपदा वृद्धिगत करे। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी ने अपने प्रेरणा मे कहा आज

हम आप लोगों से विदा होकर जा रहे हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति के सदस्यों ने सुमधुर संगान के साथ किया। शास्त्रीनगर महिलामंडल कोषध्यक्षा, पूर्वाध्यक्षा, पवन बैंगानी उपाध्यक्ष शास्त्रीनगर तेरापंथ सभा प्रवीण बैद, दिव्यांक, कुणाल संजय सुराना पूर्वाध्यक्ष तेरापंथ सभा शास्त्रीनगर कनक चौपड़ा अध्यक्ष महिलामंडल अध्यक्ष मनोज बैंगानी त्रिनगर सभा के अध्यक्ष, त्रिनगर युवक परिषद ने मंगल भावना समारोह में अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किया।

## आत्मा का टॉनिक है - ज्ञान, ध्यान, तप और त्याग

### जयपुर।

शरीर पुष्टि के लिए कई प्रकार के टॉनिक बाजार में उपलब्ध हो सकते हैं। लेकिन आत्मा की पुष्टि के लिए तो ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग, जप, स्वाध्याय आदि टॉनिक ही उपयोगी होते हैं। ये विचार मुनि तत्त्वचि जी 'तरुण' ने रविवार को भिक्षु साधना केंद्र, श्यामनगर में 'संतुलित पोषण, स्वस्थता का लक्षण' विषय पर

प्रवचन देते हुए वक्तव्य दिया मुनिश्री ने बताया कि शरीर की स्वस्थता के लिए संतुलित पोषण की चर्चा-वार्ता बहुत होती है। मन, भाव और आत्म पोषण के विषय में कोई विशेष ध्यान नहीं है। जबकि ये हमारे जीवन के लिए सर्वाधिक उपयोगी और आवश्यक है। उन्होंने कहा - तन मन के पीछे है। मन को मजबूत करना जरूरी है। तप-त्याग, शुभ-संकल्प मन के टॉनिक है। मुनि संभवकुमार जी ने कहा

- शरीर धर्म ध्यान का साधन है। मानव शरीर से ही मोक्ष की आराधना होती है। अतः संयम साधना की दृष्टि से शरीर का पोषण अनुपयोगी नहीं है। आत्मोन्नति जीवन का मुख्य ध्येय होना चाहिए। तीर्थंकर अनंत प्रभु की स्तुति से प्रवचन का प्रारंभ हुआ। मुनिश्री के चातुर्मासिक परिसंपन्नता के अवसर पर भिक्षु साधना केंद्र, श्याम नगर में मंगल भावना का कार्यक्रम रखा गया है।



# अभिनंदन एवं सम्मान समारोह में गूंजा उत्साह

विजयनगर।

अहम भवन, विजयनगर में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् (अभातेयुप) के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पवन मांडोट एवं संगठन मंत्री रोहित कोठारी का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी के पावन सान्निध्य में हुआ। अपने प्रेरक उद्बोधन में साध्वी संयमलता जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ की संस्था किशोर मंडल से पनपा एक पौधा आज वटवृक्ष का रूप ले चुका है। उन्होंने कहा कि यदि युवा पीढ़ी को प्रेरणा और प्रोत्साहन का संबल मिल जाए, तो उनकी प्रतिभा आसमान की ऊंचाइयों को छू लेती है। इसी प्रेरणा के साथ पवन मांडोट आज अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं। अपने पराक्रम, पुरुषार्थ, लगन, जोश और जुनून के साथ उन्होंने गुरु कृपा से अपने व्यक्तित्व में चार चांद लगाए हैं। उन्होंने

दोनों पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनका जीवन दिन-प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर हो और संघ तथा संघपति के इंगितों का अनुसरण करते हुए सफलता के शिखर को छुए। तेयुप विजयनगर ने अपने उत्साह और जोश के साथ कमलेश चोपड़ा एवं उनकी टीम के नेतृत्व में समय और श्रम का उत्तम नियोजन कर 366 परिषदों में से 'सर्वश्रेष्ठ परिषद' का खिताब प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं दी गईं। तेयुप अध्यक्ष विकास बाँठिया ने स्वागत उद्बोधन में अतिथियों का अभिनंदन किया तथा नवनिर्वाचित राष्ट्रीय पदाधिकारियों को बधाई दी। निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने परिषद को 'सर्वश्रेष्ठ परिषद' सम्मान मिलने पर पूरी टीम के प्रति आभार व्यक्त किया। अपने संबोधन में पवन मांडोट ने 'मिशन 2025-27' की रूपरेखा प्रस्तुत की और बैंगलोर की सातों परिषदों को मिलकर कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में अनेक संस्थाओं के अध्यक्षों एवं गणमान्य

पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जिनमें प्रमुख रूप से विमल कटारिया, टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोट, अभातेमम के राष्ट्रीय सहमंत्री मधु कटारिया, अणुविभा से कैलाश बोराणा, राजेश चावत, प्रकाश लोढ़ा, सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, महिला मंडल अध्यक्षा महिमा पटावरी, महेंद्र टेबा, ललित मांडोट, दिनेश पोखरणा, पुखराज मेहता, अरविंद मांडोट, विमल सामसूखा, मुकेश सुराणा, वीणा बैद, ममता मांडोट, ममता दलाल सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे। सभी ने पवन मांडोट, रोहित कोठारी एवं तेयुप विजयनगर को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर अभातेयुप सदस्य, तेयुप पूर्व अध्यक्ष, तेयुप प्रबंध मंडल से पवन बैद, अमित नाहटा, मनीष चावत, करण मांडोट, पीयूष ललवानी सहित कार्यसमिति सदस्य एवं श्रावक समाज के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक कावड़िया ने किया तथा अंत में मंत्री योगेश पोरवाड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

# A SMILE WITH SUNRISE कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ किशोर मंडल - हैदराबाद द्वारा टीम पारस सेवा के सहयोग से 'A smile with sunrise' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह सेवा कार्य क्लॉक टॉवर, सिकंदराबाद में संपन्न हुआ। इस पहल का नेतृत्व टीकेएम सह संयोजक रुद्र बैद और रोनक मेहर ने किया, जिनका मार्गदर्शन पूर्व संयोजक ऋषभ चिंडालिया ने किया। कार्यक्रम

में कोर कमिटी सदस्य रोनक सुराणा, कृष्णा दुगड़ तथा समर्पित किशोर मंडल टीम ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस सेवा कार्य में 10 से अधिक उत्साही किशोरों ने भाग लिया और साथ ही जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए गए। टीम पारस सेवा के सदस्यों नितिन डाक और रोहित के wholehearted सहयोग से यह कार्यक्रम सौहार्द, करुणा और एकता के वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभी स्वयंसेवकों ने मिलकर

जरूरतमंदों के चेहरों पर मुस्कान लाने का प्रयास किया। यह प्रेरणादायक पहल सेवा के सच्चे स्वरूप को दर्शाती है — जो केवल दान देने तक सीमित नहीं, बल्कि स्नेह, साझा करने और मानवता के साथ जीने का संदेश देती है। इस आयोजन की सफलता यह प्रमाणित करती है कि जब युवा एकजुट होकर किसी नेक कार्य के लिए आगे आते हैं, तो समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होता है।

## पृष्ठ 1 का शेष

पूर्वाग्रह से मुक्त होकर...

अतः व्यक्ति को उपलब्ध समय में ज्ञानार्जन का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान का कोई पार नहीं है और समय सीमित है—ऐसी स्थिति में सारभूत ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास आवश्यक है। ज्ञान के प्रति सम्मान का भाव हो, तो व्यक्ति ज्ञान-प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ सकता है। इसके साथ ही परिश्रम भी आवश्यक है। स्वाध्याय करने से चित्त की निर्मलता और शुभयोग की स्थिति बन सकती है।

अतः ज्ञान-प्राप्ति के लिए निरंतर पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। आचार्य

प्रवर ने कहा कि वर्तमान में आचार्य श्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष चल रहा है और आचार्य श्री तुलसी की दीक्षा के भी सौ वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। इन संदर्भों में विभिन्न माध्यमों से ज्ञानार्जन का प्रयास करना चाहिए। चलते-चलते उदयपुर आगमन हुआ है।

यहां की जनता में धार्मिक चेतना बनी रहे, यही मंगलकामना है। पूज्य प्रवर के स्वागत में शांतिलाल सिंघवी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। उदयपुर तेरापंथ समाज ने स्वागत-गीत का संगान किया। जीवन सिंह पोखरणा तथा तेरापंथी सभा

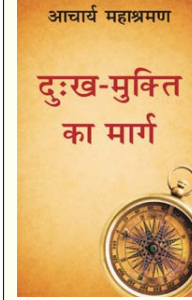
उदयपुर के अध्यक्ष कमल नाहटा ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

एक छोटी-सी सलाह...

विद्यालय के प्रधानाचार्य कृष्णकांत शर्मा ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। शिक्षिका शुभा धर्मावत ने भी अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। उपस्थित बच्चों को आचार्य प्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा देते हुए तीनों संकल्प स्वीकार करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

# बोलती किताब

## दुःख मुक्ति का मार्ग



एक गृहस्थ के लिए सर्वथा लोभहीन बनना संभव नहीं है, परंतु लोभ की वृत्ति पर नियंत्रण रहे, वह अतिमात्रा में न हो, यह आवश्यक है। लोभ के तीन स्तर होते हैं—निम्न-स्तर का लोभ वह होता है, जिसके कारण व्यक्ति दूसरों को नुकसान में डाल देता है अथवा दूसरों के साथ अन्याय कर, बेईमानी कर अपना घर भरने का प्रयास करता है। मध्यम-स्तर का लोभ वह है कि व्यक्ति अर्जन करने के लिए अथवा अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए किसी दूसरे का अहित नहीं करता, परंतु उसके मन में अर्जन की लालसा रहती है, आसक्ति का भाव रहता है।

हम सब सांसारिक प्राणी हैं। संसार एक प्रवाह है। ऐसा प्रवाह, जिसका न आदि है और न अंत है। अनंत काल से सांसारिक प्राणी इसके प्रवाह में प्रवाहित हैं। हां, कुछ-कुछ प्राणी जब तब इस प्रवाह से मुक्त होते रहते हैं पर इसके उपरांत भी संसार का यह प्रवाह कभी रुकेगा नहीं, सदा बना रहेगा। जन्म-मरण की परंपरा सतत चलती रहेगी। कोई भी सांसारिक प्राणी न तो मात्र आत्मा है और न मात्र शरीर। वह तो आत्मा और शरीर इन दोनों तत्त्वों का अनिवार्य योग है। इस अपेक्षा से ऐसा कहा जा सकता है कि सांसारिक प्राणी नित्य और अनित्य का संयोग है। आत्मा एक असंख्य प्रदेशात्मक पिंड है। परिमाण की दृष्टि से वह लोकाकाश के तुल्य है यानी आत्मा का यदि फैलाव हो तो वह संपूर्ण लोकाकाश के एक-एक प्रदेश पर व्याप्त हो जाती है

आत्मा का शाश्वत अस्तित्व असंदिग्ध है। वह इस जीवन से पहले भी थी, आज भी है तथा इस जीवन के बाद भी किसी न किसी रूप में रहेगी। शरीर तो यहीं समाप्त हो जाने वाला है। अब चिंतनीय बिंदु यह है कि व्यक्ति शाश्वत आत्मा के लिए कितना ध्यान देता है तथा नश्वर शरीर में कितना ध्यान लगाता है? खाना, पीना, सोना, धोना, कमाना आदि क्रियाएं सामान्यतः शरीर के लिए होती हैं। व्यक्ति का पूरे दिन का काफी समय इन प्रवृत्तियों में लग जाता है। ध्यान देने की बात यह है कि इन सब प्रवृत्तियों में व्यक्ति की जितनी-जितनी अनासक्ति है, आध्यात्मिकता है, वह आत्मा के लिए हितकर है। आत्मा के लिए जप, स्वाध्याय आदि लाभदायी हैं। इसलिए आत्महितेच्छु प्रत्येक व्यक्ति को स्वाध्याय, जप, सामायिक आदि के लिए अपने समय का सही नियोजन अवश्य करना चाहिए।

अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी ने अणुव्रत-आंदोलन का प्रवर्तन किया। यह आंदोलन आदमी के भीतर स्थित अधमतापरक संस्कारों को नियंत्रित करने और उसके श्रेष्ठतापरक संस्कारों को उजागर करने का एक उपाय है। अणुव्रत यह नहीं कहता है कि उसको स्वीकार करने वाला व्यक्ति महान् धनाढ्य बन जायेगा। यदि ऐसा होता तो विशेष प्रयास के बिना ही लोग अणुव्रती बन गये होते किन्तु अणुव्रत आदमी को शांतिपूर्ण तरीके से जीने का रास्ता दिखाता है। एक बात है—किसी दृष्टि से अणुव्रत गरीबी-निवारण का निमित्त भी बन सकता है। भारत की जनता की गरीबी का एक कारण नशा है। लोग परिश्रम से पैसा कमाते हैं और उसका एक हिस्सा वे अपनी नशाखोरी के लिए गवां देते हैं। अति नशा आदमी के स्वास्थ्य को भी खराब करता है। फिर डॉक्टर के पास जाने, उसे दिखाने और दवा खरीदने में भी पैसा लग जाता है। इस तरह व्यक्ति जानबूझकर सचेतन अवस्था में अनचाहे गरीबी को आमंत्रण दे देता है। जिस व्यक्ति ने पूर्णतया अणुव्रत की आचार-संहिता स्वीकार कर ली है, नशा-मुक्त हो गया है वह नशाजन्य गरीबी से बच सकता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> [books@jvbharati.org](mailto:books@jvbharati.org)

# प्रेक्षा ध्यान की शक्ति से साध्य-असाध्य रोगों का समाधान

महरोली, नई दिल्ली।

प्रेक्षा ध्यान की शक्ति और साध्य-असाध्य रोगों का समाधान विषय पर लिए गए विशेष साक्षात्कार में, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के सी जैन ने बताया कि प्रेक्षा ध्यान केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक रूप से सिद्ध उपचार पद्धति है। उनके अनुसार यह तकनीक तनाव-हार्मोन कॉर्टिसॉल और एड्रेनालिन को घटाती है, जबकि सेरोटोनिन, डोपामिन, ऑक्सीटोसिन और एंडॉर्फिन जैसे खुशी, शांति और भावनात्मक संतुलन देने वाले हार्मोन स्वाभाविक रूप से बढ़ाती

है। उन्होंने बताया कि विभिन्न शोधों द्वारा अब प्रमाणित हो गया है कि इसका प्रभाव BP, थायरॉयड, शुगर, हृदय रोग, मोटापा, गठिया, माइग्रेन और अवसाद जैसे कई पुरानी व जटिल बीमारियों में सकारात्मक पाया गया। श्री जैन बताते हैं कि दिल्ली के छत्तरपुर स्थित अध्यात्म साधना केंद्र, प्रेक्षा ध्यान को नैचुरोपैथी, योग और डिटॉक्स डाइट के साथ मिलाकर रोग समाधान का देश का एकमात्र समन्वित मॉडल संचालित कर रहा है। केंद्र सात दिवसीय आवासीय स्वास्थ्य शिविर आयोजित कर रहा है, जिसमें स्थायी स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने का सर्वोत्तम प्रबंध उपलब्ध है।

# बहुश्रुत की पर्युपासना से संभव है आत्म कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

शीशोद।

18 नवम्बर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 11 किलोमीटर का विहार कर शीशोद गांव में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि व्यक्ति के जीवन में ज्ञान का महत्त्व है। ज्ञान के बाद यदि व्यक्ति त्याग-पथ पर आ जाए और श्रमण धर्म को स्वीकार कर ले, तो वह अत्यंत महान बात हो जाती है।

श्रमण धर्म की जानकारी—उसके नियम, लाभ आदि—यदि समझने हों, तो बहुश्रुत की पर्युपासना करनी चाहिए। श्रमण धर्म का मार्ग अत्यंत पुनीत और कल्याणकारी है। यह इहलोक-हित, परलोक-हित एवं सुगति की प्राप्ति कराने वाला पथ है। इस मार्ग और आत्म-कल्याण से संबंधित बातों को जानने हेतु बहुश्रुत का समीप जाना चाहिए, क्योंकि योग्य ज्ञानी से प्रश्न करने पर ही उचित और संपूर्ण उत्तर



प्राप्त हो सकता है।

जैसे स्वास्थ्य और दवाइयों के संदर्भ में सही जानकारी डॉक्टर ही दे सकता है—और डॉक्टरों में भी विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ अलग-अलग होते हैं—उसी प्रकार धर्म के बारे में जानना हो तो

साधु से पूछना चाहिए। साधुओं में भी जो बहुश्रुत हों, ज्ञानी हों, प्रबुद्ध हों, मति और धृति से संपन्न हों—ऐसे साधुओं से पूछने पर श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त होता है। अतः बहुश्रुत का महत्त्व इसलिए है कि अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारीयों केवल उन्हीं से

प्राप्त हो सकती हैं।

प्राचीन काल में चौदह पूर्वी श्रुत केवली साधु होते थे। ऐसे ज्ञानियों का ज्ञान सामान्य साधुओं के पास नहीं होता। हमारे धर्मसंघ में भी अनेक मुनिवर श्रेष्ठ तत्त्ववेत्ता और गहन चर्चा

करने वाले हुए हैं। आचार्य भिक्षु अत्यंत ज्ञानी थे और साथ ही ज्ञान को समझाने में उनका कौशल विलक्षण था। आचार्य भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष वर्तमान में चल रहा है। उनकी बहुश्रुतता और गहन चिंतन-मनन का प्रमाण उनके साहित्य का अध्ययन करने पर मिलता है। इसी प्रकार जयाचार्य के ग्रंथ उनकी व्यापक बहुश्रुतता को प्रकट करते हैं। दोनों आचार्यों द्वारा रचित राजस्थानी भाषा की साहित्यिक संपदा अपने आप में एक महान निधि है। आचार्यश्री तुलसी का रचनात्मक कौशल भी अत्यंत विशिष्ट था। यदि हम भी अपनी बहुश्रुतता को बढ़ाएँ, प्रतिपादन की शैली को परिष्कृत करें और साथ में साधना को भी प्रगाढ़ करें, तो हम भी अनेक व्यक्तियों को कल्याण की दिशा में प्रेरित करने में समर्थ हो सकते हैं।

आचार्यश्री ने अंत में विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। विद्यालय की प्रिंसिपल ज्योतिबाला ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

## कर्मवाद का संक्षिप्त सिद्धांत है: जैसी करनी, वैसी भरनी : आचार्यश्री महाश्रमण

परसाद।

21 नवम्बर, 2025

अखंड परिव्राजक, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरण मानव-कल्याण हेतु निरंतर गतिमान हैं।

आज पूज्य गुरुदेव ने प्रातः ऋषभदेव गाँव से मंगल प्रस्थान किया और लगभग 15 किलोमीटर का विहार संपन्न कर परसाद गाँव स्थित ऋषभ पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में श्रद्धालुओं को अमृत देशना प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि कर्मवाद का सिद्धांत अत्यंत संक्षेप में यह कहता है—जैसी करनी, वैसी भरनी। व

्यक्ति जैसा कर्म करता है, उसी के अनुसार उसे फल भोगना पड़ता है। इसलिए आत्म-कल्याण के लिए

व्यक्ति को पाप-कर्मों से बचना चाहिए। हिंसा, हत्या, झूठ, चोरी आदि अठारह पाप हैं, साथ ही क्रोध, मान, राग-द्वेष जैसे कषायों से भी बचना आवश्यक है। अपने द्वारा किसी को नुकसान पहुँचाने का, किसी का बुरा करने का इरादा बनाकर कोई काम नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति पाप-कर्मों से जितना दूर रहेगा, कर्म-बन्धन से भी उतना ही बच सकेगा। अतः जितना संभव हो, जीवन में किसी का बुरा न करें और सभी के कल्याण का प्रयास करें।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने कहा कि आज मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी स्वामी केलवा से चातुर्मास संपन्न कर लौटे हैं और मार्ग में उनका हमारा मिलना हुआ।

मुनिसुव्रत नाम हमारे बीसवें तीर्थंकर का नाम भी है। मुनिश्री भक्ति में गीत भी गाते हैं तथा संघ और



संघपति के प्रति उनका भाव अत्यंत श्रद्धापूर्ण है। आचार्यश्री की अनुज्ञा

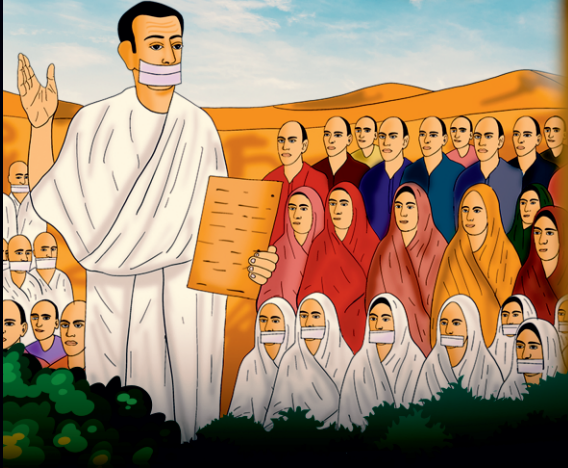
से मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए गीत का संगान

किया। मुनि शुभमकुमारजी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।



# आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

## अनाग्रह का मंत्र



आचार्य भिक्षु अनेकान्त के प्रवक्ता थे। उन्होंने अनेकान्तवाद को व्यवहार के धरातल पर उतारा। एकांगिता का दृष्टिकोण आग्रह पैदा करता है। उससे खिंचाव और तनाव पैदा होता है और उससे संगठन भी कमजोर होता है। उन्होंने लिखा—

कोई सरधा (मान्यता), आचार, सूत्र अथवा कल्प का नया बोल उपस्थित हो तो बड़ों (आचार्य) से चर्चा करे, किन्तु अन्य से चर्चा न करे। दूसरों से चर्चा कर उन्हें शंकाशील न बनाए।

बड़े (आचार्य) उत्तर दे वह बुद्धिगम्य हो तो उसे स्वीकार करे और यदि वह बुद्धिगम्य न हो तो उसे केवलीगम्य कर दे किन्तु संघ में भेद न डाले।

कोई तत्त्व-चर्चा का बोल सामने आए तो बुद्धिमान साधु विचार कर उसका निर्णय करे। कोई सरधा-मान्यता का बोल उपस्थित हो तो बुद्धिमान साधु उस पर विचार कर उसकी संगति बिठाए। किसी बोल की संगति न बैठे तो उसकी खींचातान न करे। उसे केवलीगम्य कर दे, परन्तु अंशमात्र भी आग्रह न करे।

अनाग्रह के उच्चतम शिखर पर आरोहण कर आचार्य भिक्षु ने जो घोषणा की, वह अनेकान्त की महत्त्वपूर्ण घोषणाओं में से एक है, असाधारण है।

## साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह प्रतिदिन 13 द्रव्यों से अधिक खाने का त्याग करें।

# भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

## खाई मिश्री, जाना जहर

पीपाड़ निवासी चोथजी बोहरा ने पाली में दुकान शुरू की। चतुर्मास पूर्ण होने पर स्वामीजी उसकी दुकान पर वस्त्र-याचना करने गए। उसने दो वासती का दान देकर पूछा— ‘मैं तुम्हें असाधु मानता हूँ। तुम्हें वासती का दान दिया, उसमें मुझे क्या हुआ?’

तब स्वामीजी बोले— ‘मिश्री खाई और जानता है कि मैंने जहर खा लिया है, तो वह मरता है या नहीं?’

तब वह बोला— ‘नहीं मरता, क्योंकि उसका गुण मारने का नहीं है।’

स्वामीजी बोले— ‘वैसे ही हम साधु हैं और तुमने हमें असाधु जान कर दान दे दिया, तो वह तुम्हारे ज्ञान की खामी है, किन्तु साधु को दान देने में धर्म ही होता है।’



# जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को



## पौषधोपवास

धर्म को पुष्ट करने वाले व्रत विशेष का नाम पौषध है। एक दिन एक रात के लिए चारों प्रकार के आहार (1) अशन— जो भूख मिटाने मुख्यतः खाया जाता हो, (2) पान-पानी, (3) खादिम-सूखे मेवे, (4) स्वादिम— मुखवास की सारी सामग्री आती है। इसे पानी को छोड़कर तीनों आहार का त्याग भी किया जा सकता है। उपवास करके पौषध के नियम का पालन करना पौषधोपवास व्रत कहलाता। इसका पूरा पाठ उपलब्ध होता है। यह 11वां व्रत है। अशन-पान-खादिम-स्वादिम का त्याग, अब्रह्मचर्य का त्याग, मणि सुवर्ण-अलंकार आदि का प्रत्याख्यान, माला रंग का प्रत्याख्यान, शस्त्र का त्याग, सावध व्यापार का त्याग मैं दिन रात पर्यन्त दो करण तीन योग से त्याग करता हूँ। यह एक दिन के लिए साधुव्रत हो जाने जैसा है। पौषध पूरा करने के लिए इसका आलोचना पाठ है। इसमें प्रतिलेखन करना व प्रतिक्रमण अनिवार्य है। पौषधोपवास को दोष रहित करने के लिए भी कुछ सावधानी जरूरी है। जैसे की गृहस्थों का सत्कार नहीं करना, शृंगार नहीं करना, अधिक नींद नहीं लेना, अप्रति लेना, राग-द्वेषात्मक बातें करना, खुले मुंह बोलना आदि इस प्रकार पौषध की आराधना सम्यक् रूप से की जा सकती है।

## क्या आप जानते हैं?



धनिया, पुदीना, नारियल आदि की चटनी में यदि टमाटर आदि के बीज साबुत रह जाएँ या पत्ती बिना पीसी रह जाए तो उस चटनी को सचित्त माना जाता है। भले वह प्रक्रिया मिक्सी आदि किसी भी विधा से की गई हो।



# मेवाड़ का तेरापंथ से है गहरा संबंध : आचार्यश्री महाश्रमण

## ऋषभदेव स्थित केसरियाजी तीर्थस्थल क्षेत्र में मेवाड़ स्तरीय स्वागत समारोह का हुआ आयोजन

ऋषभदेव।

20 नवम्बर, 2025

अपनी धवल सेना के साथ निरंतर गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 15 किलोमीटर का विहार कर ऋषभदेव में स्थित केसरियाजी तीर्थस्थल में किकाभाई धर्मशाला में पधारे। आज आचार्यश्री का मेवाड़ स्तरीय स्वागत समारोह ऋषभदेव गांव में स्थित केसरियाजी तीर्थस्थल में आयोजित था। महामनस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत वांगमय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है। प्रश्न होता है कि कौनसा धर्म उत्कृष्ट मंगल है? कहा गया है कि अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है और तप धर्म है। अहिंसा का पालन कोई भी करे—चाहे जैन हो, सनातनी हो, मुसलमान हो—किसी भी धर्म का हो, उसका भला होता है। नास्तिक व्यक्ति भी, मिथ्या-दृष्टि वाला व्यक्ति भी अहिंसा का पालन करेगा तो उसका भी कल्याण हो सकेगा। इस मार्ग में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है।

धर्मसंघ के नवम आचार्य, अणुव्रत



अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन चलाया। अणुव्रत का सिद्धांत अत्यंत व्यापक है जिसमें अहिंसा और संयम दोनों का समावेश है। अणुव्रत को स्वीकार करने वाला कोई भी व्यक्ति—नास्तिक हो या आस्तिक—अच्छा इंसान बन सकता है। आचार्यश्री तुलसी की दीक्षा के सौ वर्ष पूर्ण होने वाले हैं, और तेरापंथ धर्मसंघ के आद्याचार्य आचार्य भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष भी वर्तमान में चल रहा है। इसी वर्ष चातुर्मास संपन्न कर हम गुजरात से प्रस्थान कर आज ऋषभदेव, केसरियाजी क्षेत्र में पहुंच गए हैं। यह राजस्थान—मेवाड़ की पावन धरा है। मेवाड़ का तेरापंथ से गहरा संबंध

है—तेरापंथ की मानो यह जन्मस्थली है। अंधेरी ओरी, केलवा—ये सभी स्थान आचार्य भिक्षु से जुड़े हुए हैं। आज इस पावन मेवाड़ की धरा पर पधारने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

सभी में सद्भावना रहे। व्यक्ति के जीवन में ईमानदारी हो। हर कार्य में ईमानदारी रखने का प्रयास होना चाहिए। साथ ही नशीले पदार्थों से बचने का अभ्यास हो। व्यक्ति के जीवन में जितना धर्म होगा, वह मंगल का कारण बनेगा। आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान करवाते थे जिसमें अपने आप को देखने की बात है—मैं कौन हूँ? मेरे भीतर क्या है? आत्मा क्या है? इस प्रकार अपने आप

को गहराई से देखना प्रेक्षा ध्यान का मूल तत्त्व है।

यह स्थान भगवान ऋषभदेव से संबंधित है। भगवान ऋषभदेव इस अवसर्पिणी काल के भरत क्षेत्र के प्रथम तीर्थंकर हुए। उनका व्यक्तित्व अत्यंत व्यापक था—वे केवल जैन धर्म तक सीमित नहीं थे। उन्होंने जनता को अनेक शिक्षाएँ प्रदान कीं और प्रथम तीर्थंकर के रूप में प्रतिष्ठित हुए। 'भक्तामर स्तोत्र' भगवान ऋषभदेव की स्तुति है। इस क्षेत्र में लगभग 42 वर्षों बाद आगमन हुआ है। मेवाड़ के अन्य क्षेत्रों—उदयपुर आदि—की भी यात्रा होगी। जितना संभव हो सके, इस अवसर का धार्मिक—

आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अनेक लोग तीर्थयात्राएँ करते हैं। जैन धर्म में भी कई तीर्थस्थल हैं। आज यहां चलते-फिरते तीर्थ—आचार्यश्री महाश्रमणजी—पधारे हैं। जैन दर्शन में सबसे महत्वपूर्ण है सम्यक् दर्शन। जब दृष्टि निर्मल होती है तभी व्यक्ति ज्ञान और आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है।

आचार्यश्री के स्वागत में मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत, यात्रा संयोजक पंकज ओस्तवाल, समारोह संयोजक एवं भीलवाड़ा के उद्योगपति प्रवीण ओस्तवाल ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति व्यक्त की।

राजस्थान सरकार के सहकारिता मंत्री गौतम दक ने भी मेवाड़ में आचार्यश्री की अभिवंदना करते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी और मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। मेवाड़ तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत-गीत का संगान किया तथा मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के सदस्यों ने भी गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

## आचार्यश्री महाश्रमणजी : मंगल विहार

